सम्पादकीय
जीवन का आनन्द उत्कृष्ट परम्पराओं के साथ ही लें 2

छत्तीसगढ़ में नारी सशक्तिकरण का हुआ शंखनाद 3

श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य तीर्थ में नींव पूजन कार्यक्रम 7

भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अखिल विश्व गायत्री परिवार का योगदान सराहनीय-**महा महिम राष्ट्रपति** 8

श्री गुरु नानक जयन्ती एवं श्री लक्ष्मीबाई जयन्ती पर जन जागरण रैली 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 दिसम्बर 2021

वर्ष : 34, अंक : 12
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 दिसम्बर 2021
वार्षिक चंदा : ₹60/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 800/-
प्रति अंक : ₹ 3/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

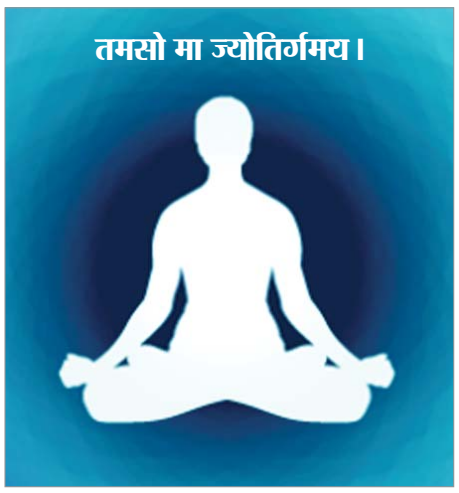

जीवन दर्शन के तीन स्वर्णिम सूत्र

अपने को जानो, अपने को स्वीकार करो, अपने आप में रहो

मनुष्य शरीर ही नहीं है

'हेडफील्ड' प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक के रूप में प्रख्यात हैं। जीवन को सुखी, समुन्नत, आनन्दमय, शान्ति एवं सन्तोषयुक्त बनाने के लिए उन्होंने तीन अमूल्य सूत्र बताये हैं, जो हर व्यक्ति के लिए हर परिस्थितियों में उपयोगी हैं। इन्हें जीवन-दर्शन के तीन सारभूत सिद्धान्त समझे जा सकते हैं। अपनी पुस्तक ''साइकोलॉजी एण्ड मॉरल्स'' में उन्होंने तीन सूत्रों का उल्लेख इस प्रकार किया है- (१) अपने आपको जानो (२) अपने आपको स्वीकार करो (३) अपने आप में रहो।

अपने को जानने का अर्थ है-अपनी सत्ता से सुपरिचित होना। सामान्यतया परिचय का क्षेत्र भौतिक जगत्, शरीर, इन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं। प्रत्यक्ष शरीर दीखता है। इसलिए समझा जाता है कि शरीर ही सब कुछ है और अपनी सत्ता भी शरीर ही तक है। अस्तु, शरीर को ही सब कुछ मानने एवं बोध का क्षेत्र इन्द्रियों तक ही सीमित रह जाने के कारण उनकी सीमित शक्ति का लाभ मिल पाता। अधिकांश व्यक्तियों का जीवनक्रम इस मान्यता के इर्द-गिर्द ही घूमता एवं लुढ़कता रहता है। फलतः खाने, कमाने एवं प्रजनन सीमा के सीमित दायरे से निकलते नहीं बनता। न कुछ विशिष्ट करते बनता है और न ही विशिष्ट सोचते।

अपनी वास्तविक सामर्थ्य शरीर की क्षमता की तुलना में असंख्य गुनी अधिक है। आत्मसत्ता शक्ति की पुञ्ज है। इन्द्रियों की क्षमताएँ तो उसकी कुछ तरंगें मात्र हैं। असली सामर्थ्य का केन्द्र तो आत्मा है, इसका बोध न होने से ही मनुष्य अपने को दीन-हीन, गया-गुजरा, असमर्थ-असहाय महसूस करता और किसी तरह जीवन के दिन पूरे करता है। इसके विपरीत अपनी भीतरी सामर्थ्य का बोध होते ही बाह्य जीवनक्रम एवं परिस्थितियों में भारी हेर-फेर हो जाता है। तब उसे अनुभव होता है कि आत्मा के भीतर प्रचण्ड शक्ति भरी पड़ी है। आत्म-विश्वास के उदय होते ही मनुष्य बाह्य परिस्थितियों को उतना महत्त्व नहीं देता, जितना कि मनुष्य के भीतर समाहित विशेषताओं को।

हेडफील्ड का कहना है कि ''जीवन में अधिकांश व्यक्ति इसलिए असफल रहते हैं कि उनमें आत्मविश्वास नहीं होता, अपनी शक्ति से अपरिचित होते हैं। अस्तु उससे लाभ उठाते भी नहीं बनता। फलतः कुछ विशेष नहीं कर पाते, जबकि ऐतिहासिक सफलताएँ आत्मविश्वासियों को मिलती हैं।'' असफलताओं का रोना रोने वाले, निराशा के गर्त में डूबे व्यक्तियों के लिए हेडफील्ड के ये स्वर्णिम वाक्य सारगर्भित एवं अति उपयोगी हैं-''निराशा एवं अवसाद से निकलकर अपने भीतर झाँको। देखो तुम्हारे अन्दर शक्ति का स्रोत छिपा पड़ा है।''

हेडफील्ड का दूसरा सिद्धान्त है-''अपने आपको स्वीकार करो।'' इसे आत्मबोध का द्वितीय चरण समझा जा सकता है, जो कर्मयोग की प्रेरणा देता है। अपने को जानना ही पर्याप्त नहीं है, वरन् यह भी आवश्यक है कि मनुष्य जीवन का जो कुछ भी अनुदान मिला है उसे परमात्मा का वरदान मानकर सहर्ष स्वीकार किया जाय। अर्थात् प्राप्त अनुदानों का सदुपयोग किया जाय। अपने को दीन-हीन मानने की तुलना में यह समझा जाय कि हम संसार के महत्त्वपूर्ण घटक हैं तथा हमारा जन्म पेट-प्रजनन जैसे निकृष्ट प्रयोजन के लिए नहीं, किसी महान् उद्देश्य के लिए हुआ है। विश्व वसुधा अंचल फैलाए हमारे सहयोग की अपेक्षा कर रही है।

यह आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति को हर तरह की क्षमता प्राप्त हो। उसके पास शरीर-बल, बुद्धि-बल, भाव-बल, सम्पत्ति में से किसी भी तरह की सामर्थ्य क्यों न हो, सभी अपने में महत्त्वपूर्ण तथा उपयोगी हैं। यह सोचना निराधार है कि अमुक तरह की योग्यता होती अथवा साधन उपलब्ध होते तो महत्त्वपूर्ण कार्य किया जाता। जिस भी तरह की क्षमता-साधन प्राप्त हैं, उनके ही सदुपयोग द्वारा बहुत कुछ किया जा सकता है।

यह तथ्य हृदयंगम किया जाना चाहिए कि महान् कार्य योग्यता, प्रतिभा के बलबूते नहीं, उच्चस्तरीय आदर्श एवं सिद्धान्तनिष्ठा द्वारा सम्पादित किए जाते हैं। उनमें योग्यता-प्रतिभा का योगदान तो होता है पर तभी, जबकि वे उत्कृष्टता के पक्षधर बनें। अस्तु, योग्यता संवर्द्धन के लिए प्रयत्न किए जाने चाहिए, पर इतने पर भी यदि किसी विशेष तरह की योग्यता अर्जित न हो सकी तो यह नहीं समझा जाना चाहिए कि वह प्राप्त होती, तभी महत्त्वपूर्ण कार्य कर सकते थे। जो प्राप्त है उस क्षमता का ही नियोजन यदि ठीक प्रकार बन पड़े तो आत्मनिर्माण एवं लोक-कल्याण की दिशा में इतना कुछ किया जा सकता है जितना कि विपुल साधनों के रहते भी नहीं किया जा सकता। अतएव आवश्यकता इस बात की है कि अनुपलब्ध साधनों अथवा योग्यताओं के कारण निराश न हुआ जाय। जो उपलब्ध है उसका अधिक से अधिक सदुपयोग किया जाय।

महामानवों के इतिहास पर दृष्टिपात करने पर यह पता चलता है कि अधिकांशतः विपन्न परिस्थितियों में जन्मे एवं पले। योग्यता एवं प्रतिभा की दृष्टि से भी उससे असंख्यों आगे थे, किन्तु सबको पीछे छोड़ते हुए वे आगे निकलकर महानता के उच्च शिखर पर जा पहुँचे। विचार करने पर इसका एक ही कारण नजर आता है कि उन्होंने अपने समय, श्रम एवं मनोयोग का पूरी तत्परता के साथ उपयोग किया। इसके विपरीत साधनों एवं योग्यताओं से सम्पन्न होते हुए भी उनका सदुपयोग न बन पाने के कारण कितने ही व्यक्ति सामान्य जीवनचर्या से आगे नहीं बढ़ पाते।

सुखी-सन्तुष्ट आनन्दयुक्त जीवन के लिए हेडफील्ड का तीसरा सन्देश है-''अपने आप में सन्तुष्ट रहो।'' प्रसन्नता, अप्रसन्नता का केन्द्र सामान्यतया बाह्य परिस्थितियों एवं व्यक्तियों को बनाया जाता है। परिस्थितियों तथा व्यक्तियों में परिवर्तन होते रहते हैं। उनके प्रभाव सुखप्रद अथवा दुःखप्रद दोनों ही तरह के हो सकते हैं।

''निराशा एवं अवसाद से निकलकर अपने भीतर झाँको। देखो तुम्हारे अन्दर शक्ति का स्रोत छिपा पड़ा है।''
- हेडफील्ड

उनके भले-बुरे प्रभाव पड़ने भी स्वाभाविक हैं। दृष्टिकोण बहिर्मुखी होने से मनुष्य को असन्तोष ही हाथ लगता है। उपलब्धियाँ हासिल करने के लिए प्रयत्नशील रहा जाय, यह ठीक है, पर अनावश्यक ललक-लिप्सा तो हर दृष्टि से हानिकारक है। व्यक्ति एवं वस्तुओं के प्रति भी आसक्ति इस सीमा तक न जोड़ी जाय कि उनके न रहने अथवा प्रतिकूल हो जाने पर निराशा एवं असन्तोष की मनःस्थिति से गुजरना पड़े। अस्तु, प्रसन्नता का केन्द्रबिन्दु अपनी अन्तरात्मा को मानना ही श्रेयस्कर एवं सहायक है।

जीवन-दर्शन के ये तीन सिद्धान्त अपने में महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ छिपाये हुए हैं, जिनका अवलम्बन लेकर किन्हीं भी परिस्थितियों में अपनी मनःस्थिति सुदृढ़ बनाये रखना सम्भव है। मन को शान्त, प्रसन्नचित्त रखने एवं विकास के मार्ग पर अग्रसर होने के लिए ये सूत्र हर किसी के लिए उपयोगी एवं लाभप्रद सिद्ध हो सकते हैं।

वाङ्मय खण्ड-53 (धर्म तत्त्व का दर्शन और मर्म), पृष्ठ 2.70 से संकलित, सम्पादित

विचार क्रान्ति का एक प्रभावशाली माध्यम-प्रज्ञा अभियान

24 अंक
₹ 60/-वार्षिक
₹ 1500/- में
25 अंक

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क कीजिए :
92583 69413

- प्रचार पत्रक के रूप में नि:शुल्क भी देने योग्य कम कीमत (₹60/-वार्षिक)
- रोचक, रंगीन, गुरुदेव के विचार, सामयिक मार्गदर्शन, मिशन की गतिविधियों, योजनाओं के साथ लोगों को मिशन का समग्र परिचय कराने वाला माध्यम।
- प्रज्ञा अभियान के साथ एक व्यक्ति से वर्ष में 24 बार संपर्क होगा तो निश्चित ही वह मिशन की गतिविधियों और विचारधारा से प्रभावित होगा।
- दीक्षा, संस्कार, यज्ञ आदि से जुड़ने वाले लोगों की आस्था बढ़ेगी।
- अपने समयदान-अंशदान का संकल्प निभाते हुए हर वर्ष नए लोगों को मिशन से जोड़ने का सुगम माध्यम।
- जनसंपर्क करने वाले की स्वयं की श्रद्धा परिपक्व होगी। आत्मसंतोष, लोकसम्मान, दैवी अनुग्रह की प्राप्ति से कार्यकर्त्ता के रूप में विकसित होने का उत्साह बढ़ेगा।
- हर शाखा मज़बूत होती जाएगी, हर आन्दोलन को गति मिलेगी।
- अपने क्षेत्र के हर गाँव-मोहल्ले में मिशन को पहुँचा देना संभव होगा।

(25 प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड डाक के भेजे जाते हैं, जिससे मिलने की सुनिश्चितता रहती है।)

हर शाखा 25 पाक्षिक अवश्य मँगाए, हर परिजन 5 नए लोगों तक पहुँचाए।

नोट : कोरोना काल के व्यवधान के कारण अधिकांश ग्राहकों की सदस्यता का नवीनीकरण नहीं हो पाया है। कृपया अपनी सदस्यता का यथाशीघ्र नवीनीकरण करा लें, ताकि युग चेतना का प्रवाह अबाध रहे।

जीवन का आनन्द उत्कृष्ट परम्पराओं के साथ ही लें

प्रचलित प्रवाह में बहने की अपेक्षा अपनी महान् संस्कृति को जानना व अपनाना ही बेहतर है

जीवन का आनन्द

मनुष्य जीवन आत्मा के उत्कर्ष का सर्वोत्तम साधन है। परमात्मा ने वह सौभाग्य सृष्टि में किसी अन्य प्राणी को नहीं दिया, जो मनुष्य को दिया है। इस जीवन के महत्त्व को समझा जाना चाहिए। मनुष्य जीवन की महत्ता के अनुरूप उसके उपयोग में ही उसकी सार्थकता है। यदि सोने के कटोरे में पौधा लगाकर उसका उपयोग घर की सजावट के लिए किया जाए तो उसे उस सोने के कटोरे का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। संगीत के जो मँहगे उपकरण अंतःकरण को तृप्त कर सकते हैं, बड़ी-बड़ी सभाओं में समा बाँध सकते हैं, उनका उपयोग यदि खिलौनों की तरह किया जाए तो यह नासमझी ही होगी। मुनष्य जीवन भी परमात्मा की अनमोल देन है। उसी गरिमा के अनुरूप इसका सदुपयोग आत्मा के उत्थान और सृष्टि के कल्याण के लिए किया जाए, इसी में उसकी सार्थकता है।

जीवन बोझ नहीं है, इसे आनन्दपूर्वक जिया जाना चाहिए। यदि जीवन में आनन्द नहीं है तो उसके उत्थान की कल्पना भी नहीं की जा सकती। महापुरुषों के जीवन से इसे समझा जा सकता है। जिन्हें महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त है या जिन्होंने उनके जीवन को पढ़ा-समझा है, वे भलीभाँति जानते हैं कि महान व्यक्ति बड़ी से बड़ी कठिनाइयों के बीच भी अपनी मनोविनोदी प्रवृत्ति को जीवन्त रखे रहते हैं। जो कठोर तप-साधनाओं को हँसते-हँसते पूरा करते हैं तथा जीवन की उलझनों व समस्याओं को अपने मन पर हावी नहीं होने देते, वे ही सचमुच में महान् होते हैं।

आनन्दपूर्वक जीवन जीना हर व्यक्ति की चाह है और उसकी सहज प्रवृत्ति भी है। वह दुःखी और परेशान तो तब होता है जब वह स्वयं को भूलकर अपने को लोभ, मोह, अहंकार के मकड़जाल में उलझाता जाता है और सांसारिक बंधनों में बँधता जाता है। यदि वह चाहे और सही सोच के साथ जीवन जिये तो इन बन्धनों से वैसे ही छुटकारा पाया जा सकता है, जैसे मकड़ी स्वयं अपने जाले को निगल लेती है।

परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि जीवन खेल की तरह से और रंगमंच की तरह से जिया जाना चाहिए। जो खिलाड़ी जीत-हार की परवाह न कर खेल के मैदान में उतरते हैं और हर बार कुछ सीखकर लौटते हैं, वे ही सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ते चले जाते हैं। जीत-हार का जश्न या दुःख तो क्षणिक होता है, असली उपलब्धि तो अपनी सामर्थ्य और कौशल का विकास है। जीत-हार खेल का हिस्सा है, जो आज हारा है, वह कल जीतेगा भी।

रंगमंच के कलाकार नाटक में मिली अपनी भूमिका से बहुत ज्यादा प्रभावित नहीं होते। एक दिन वे नौकर की भूमिका में होते हैं तो दूसरे दिन शासक की। कलाकार का कौशल इसी में है कि जो भूमिका उसे मिली है, उसे तन्मय होकर कुशलता से निभाए।

मनुष्य जीवन भी इसी मानसिकता के साथ जिया जाये तो जीवन का आनन्द ही बढ़ जाये। आत्मा की यात्रा अनन्त है। परमात्मा ने हमें यह जीवन रंगमंच के एक कलाकार की तरह दिया है। जो भूमिका हमें मिली है, उसे सच्चाई और अच्छाई की राह पर चलते हुए निभाया जाए, इसी में हमारा कल्याण और आत्मा का उत्थान है। जीवन में कष्ट, कठिनाइयाँ कम नहीं आतीं, लेकिन जो अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानते हैं वे उससे बहुत प्रभावित नहीं होते। जो लोग हर परिस्थिति में प्रसन्न रहते हुए अवरोधों को पार करते जाते हैं, सच्चाई और अच्छाई की राह कभी नहीं छोड़ते, वे ही सही मायनों में आत्मा का उत्थान कर पाते हैं, वे ही संत और महात्मा बनते हैं।

हमारी उदात्त संस्कृति

हमारी सनातन संस्कृति सदैव यही सिखाती है कि परिस्थितियाँ कैसी भी हों, हमें अपने वास्तविक जीवन लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। जीवन का हर पल समझदारी, आनन्द और उल्लास के साथ जिया जाना चाहिए। सनातन संस्कृति के शिल्पकार ऋषियों ने जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के साथ ऐसी उदात्त परम्पराएँ जोड़ दी हैं, जो इस संदर्भ में हमारा सतत मार्गदर्शन करती हैं, हमें जीवन लक्ष्य की याद दिलाती रहती हैं। आवश्यकता इन्हें समझने और प्रचलित प्रवाह में न बहकर अपनी मूल संस्कृति के अनुरूप उत्कृष्टता को अपनाने की है। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के साथ जीवन जिया जाए तो हर परिस्थिति में व्यक्ति आनन्द की अनुभूति कर सकता है।

पर्व-त्यौहारों की जीवन में उमंग और उल्लास बढ़ाने में अहम भूमिका होती है। इन उत्सवों में जहाँ मौज-मस्ती का वातावरण होता है, वहीं महत्त्वपूर्ण प्रेरणाएँ भी निहित होती हैं, जिन्हें समझा और अपनाया जाना चाहिए। चिन्ता का विषय यह है कि समय के साथ पर्व-त्यौहारों के आयोजन में तरह-तरह की मूढ़ मान्यताएँ घुस जाती हैं, अंधविश्वासों के प्रभाव से अनचाही परम्पराएँ जुड़ जाती हैं। जो परम्परा किसी परिस्थिति में कभी उपयोगी रही होगी, उसे बिना किसी औचित्य-अनौचित्य के विचार किए समाज आज ढोता चला आ रहा है। ऐसी परम्पराओं पर विचार कर मूढ़ मान्यताओं और अंधविश्वासों से मुक्ति पानी ही चाहिए।

परम पूज्य गुरुदेव ने धर्मतंत्र के परिष्कार के क्रम में अंधविश्वासों और मूढ़मान्यताओं को दूर कर समाज में प्रगतिशील परम्पराओं को विकसित करने पर बहुत बल दिया है। हर क्षेत्र एवं हर वर्ग में यह अवांछनीयताएँ घुसी दिखाई देती हैं। युग निर्माण आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण चरण यह है कि हम जिम्मेदारी एवं बहादुरी के साथ आगे बढ़ें, समझदारी के साथ उन्हें दूर करने के ईमानदार प्रयास करें। अवांछनीयताएँ अनन्त हैं, उनका विश्लेषण किया जाना कठिन है, लेकिन यहाँ कुछ ऐसी सामयिक अवांछनीयताओं की चर्चा करते हुए उनके प्रति ध्यान आकर्षित किया जा रहा है जो अपनी सनातन संस्कृति के अनुरूप नहीं हैं। पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते हुए समाज इन्हें अपना रहा है।

सोचो, समझो, फिर अपनाओ

बात 1 जनवरी की :

परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है-मनुष्य नवीनता का उपासक है, इसीलिए हर नए शुभारंभ का उत्सव मनाया जाता है। हिन्दू संस्कृति में नववर्ष का शुभारंभ चैत्र प्रतिपदा से माना जाता है, हम उसे साधनात्मक वातावरण में अपनी उदात्त परम्पराओं के साथ मनाते हैं और आनन्द, उल्लासपूर्वक बेहतर कल के लिए प्रार्थना-पुरुषार्थ करते हैं।

हमारे देश में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नववर्ष का मनाया जाना तर्कसंगत है। यह वह ऋतु संध्या है जब प्रकृति नई करवट लेती है। यहाँ से शीत ऋतु का समापन और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। यह नई फसलों को बोने का समय होता है। सूक्ष्म जगत् साधना के अनुकूल शान्त होता है, जिसका सदुपयोग कर साधक जीवन में नई ऊर्जा की अनुभूति करते हैं।

वर्ष परिवर्तन की दृष्टि से 1 जनवरी का उत्सव सारी दुनिया में मनाया जाता है। हमारी पर्व परम्परा किसी न किसी नवीनता का स्वागत करने के लिए निर्मित की गई है और इस दृष्टि से इस नवीनता का स्वागत किया जाए तो इसमें बुराई भी नहीं है; लेकिन यह उत्सव अपनी सनातन प्रेरणादाई परम्पराओं के साथ ही मनाया जाय तो बेहतर है। ऐसी परम्पराएँ, जो हमें उत्थान के लिए प्रेरित करती हों, पतन के लिए नहीं।

वर्तमान समय में 1 जनवरी का दिन ही नहीं, जन्मदिन, विवाहदिन जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण और आत्मबोध में उपयोगी पर्व भी अविवेकपूर्ण परम्परा के साथ मनाए जाने लगे हैं। इनके औचित्य पर हमें गंभीरता से विचार करना चाहिए और वही परम्पराएँ अपनानी चाहिए, जो सार्थक हैं, जिनमें जीवन का उत्कर्ष छिपा है। श्रेष्ठ परम्पराएँ अपनाकर सच्चाई और अच्छाई के पथ पर चलते हुए ही जीवन का सच्चा आनन्द लिया जा सकता है। आधुनिक जीवन शैली में कुछ ऐसी परम्पराएँ चल पड़ी हैं, जिनकी ओर विचार किए जाने की आवश्यकता है। जैसे-

अंतर परम्पराओं का

उत्सव का समय :

सनातन संस्कृति में नये दिन का शुभारम्भ उषा वेला से माना जाता है। यह वह समय होता है जब रात्रि का अंधकार छँटता है और नई भोर में नई ऊर्जा एवं ऊष्मा का संचार होता है। प्रकृति में नई ताजगी देखी जाती है। मानव और अन्य प्राणी भी अपनी थकान को दूर कर नए उत्साह के साथ नवीन कार्यों के लिए तत्पर होते हैं। हमारी संस्कृति में सदैव अंधकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत्य की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर ले जाने की प्रार्थना की जाती है। इस दृष्टि से नवीनता का स्वागत प्रभातकाल में नयी ऊर्जा और नयी ताजगी के साथ ही होना चाहिए। सूर्योदय के साथ किया जाना ही श्रेयस्कर है।

नये वर्ष की तिथि मध्य रात्रि से बदलती है, सो तो ठीक है, लेकिन आजकल जन्मदिन, विवाहदिन जैसे अवसरों पर भी देर रात को उत्सव-समारोह मनाने की परम्परा चल पड़ी है। विवाह संस्कार नहीं, प्रदर्शन प्रधान होते जा रहे हैं। नववर्ष का स्वागत भी हम मध्य रात्रि की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठ परम्पराओं के अनुरूप कर सकते हैं। नए वर्ष में सबसे पहले उत्सव में अपनी ऊर्जा क्षीण कर और नशे में अपनी मानसिक क्षमताओं को शिथिल कर सो जाने की अपेक्षा अपनी सामर्थ्य का सृजनात्मक उपयोग करने में ही समझदारी है, जीवन का उत्कर्ष निहित है।

परमात्मा का स्मरण :

हमारे यहाँ श्रेष्ठ अवसरों पर ईश्वर की पूजा-प्रार्थना का विधान है। इनके माध्यम से हम पर्व की महत्ता को समझते और जीवन को उत्कर्ष की ओर अग्रसर करने के सूत्रों को हृदयंगम करते हैं। अपने यहाँ पर्व-त्यौहारों पर, जीवन के शुभ दिनों पर व्रत-उपवास रखने ओर श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने के संकल्प लेने का विधान है। यह स्वास्थ्यवर्धक हैं और हमारी मनोभूमि में पवित्रता, शुचिता का संचार करते हैं।

आधुनिक भोगवादी जीवन शैली में ऐसा नहीं है। वहाँ तो उत्सव के नाम पर नशा, मदिरापान, मांसाहार जैसी प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन दिया जाता है। यह प्रवृत्तियाँ उत्थान की ओर नहीं, पतन की ओर ले जाने वाली हैं। हमारी संस्कृति में पर्व-त्यौहारों पर जहाँ पूजा, प्रार्थना, भजन, संकीर्तन, स्वाध्याय जैसी परम्पराएँ अपनाई जाती हैं, वहीं आजकल लोग प्रचलित प्रवाह का अंधानुकरण कर फूहड़ नाच-गान, हो-हल्ला वाली परम्पराओं को अपनाते देखे जाते हैं। ऐसे लोग अपने बच्चों में, अपने घर-परिवार में अच्छे संस्कार और सुख-शान्ति के वातावरण की कल्पना कैसे कर सकते हैं। मांस, मदिरा के सेवन से धुत होकर मौज-मस्ती के साथ उत्सव मनाने की परम्परा आदिवासियों की भी रही है। आज हम अपने आप को उनसे विकसित और श्रेष्ठ मानते हैं तो हमारी परम्पराओं में पवित्रता, सात्विकता, उत्कृष्टता का समावेश होना ही चाहिए।

बुझाओ नहीं, ज्योति जलाओ :

सनातन संस्कृति में शुभ अवसरों का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन के साथ किये जाने की परम्परा रही है। भाव स्पष्ट है कि नये सुयोग के साथ जीवन में सद्ज्ञान का, सत्प्रेरणाओं का प्रकाश फैले। जीवन का अज्ञान- अंधकार दूर हो, जीवन सन्मार्ग की ओर अग्रसर हो। हम केक काटने और मोमबत्ती बुझाने जैसी आज की प्रचलित परम्पराओं की अपेक्षा अपनी महान् संस्कृति का अवलम्बन करते हुए स्वयं को और अपने परिवार व समाज को बेहतर प्रेरणाएँ दे सकते हैं। यह नहीं भूला जाना चाहिए कि हर क्रिया का सूक्ष्म प्रभाव मन-मस्तिष्क पर पड़ता ही है। इसलिए विवेकसम्मत परम्पराएँ अपनाना ही बेहतर है।

आतिशबाजी का क्या औचित्य है?

आजकल सारी दुनिया में प्रदूषण का भारी संकट है। ऐसे में दीपावली, नववर्ष, विवाह एवं अन्य उत्सवों में पटाखे चलाने, आतिशबाजी करने का क्या औचित्य है? इनसे प्राणिमात्र के स्वास्थ्य पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जितना धन आतिशबाजी में व्यय किया जाता है, उससे यदि समाजोपयोगी काम होने लगें तो जो आंतरिक संतोष और आनन्द की अनुभूति होगी, वह क्षणिक उत्सव के आनन्द से कहीं बेहतर होगी। परमार्थ का आनन्द ही निराला होता है।

भगवान् राम के अयोध्या लौटने पर दीपमालाएँ सजाकर दीवाली मनाई गई थी। यही उत्सव की उत्तम परम्परा है। ऐसी श्रेष्ठ पराम्पराओं के माध्यम से ही अपने अंतस् के आनन्द को विकसित और पोषित करने के प्रयास किए जाने चाहिए।

अत्यंत उत्तम है यज्ञ-दीपयज्ञ की परम्परा :

परम पूज्य गुरुदेव ने हर शुभ कार्य में यज्ञ अथवा दीपयज्ञ को जोड़कर जीवन के उत्थान की प्रेरणाएँ देने की परम्परा विकसित की है। हमें इसी श्रेष्ठ परम्परा को अपनाना और समाज में प्रचलित करना चाहिए। पर्व-त्यौहारों के साथ-साथ जन्मदिन, विवाहदिन, विभिन्न संस्कार एवं सभा समारोहों में यज्ञ-दीपयज्ञ का तर्क संगत स्वरूप, चाहे वह छोटा-सा ही क्यों न हो, जोड़कर समाज को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा दी जानी चाहिए।

समझदारी अंधानुकरण में नहीं, जीवन की वास्तविकता का बोध कराने वाली श्रेष्ठ परम्पराओं को अपनाने तथा महानता की ओर अग्रसर होने में है। उत्सव, पर्व-त्यौहार, समारोह जीवन में उमंग, आनन्द, उत्साह बढ़ाने के लिए होते हैं। अतः अपनी महान् संस्कृति की श्रेष्ठता को हृदयंगम कर वही परम्पराएँ अपनाई जानी चाहिए जो हमें क्षणिक नहीं, शाश्वत आनन्द की ओर प्रेरित करती हों। अंधविश्वास, मूढ़मान्यता और अंधानुकरण से मुक्ति में ही आत्मा का उत्थान एवं समाज का कल्याण निहित है।

छत्तीसगढ़ में हुआ नारी सशक्तीकरण का व्यापक शंखनाद

छत्तीसगढ़ के 28 जिलों में 30 स्थानों पर सम्पन्न हुई जिला स्तरीय दो दिवसीय आवासीय नारी सशक्तीकरण कार्यशाला ।

23 टोलियों के माध्यम से 102 बहनों ने दिया प्रशिक्षण। प्रथम बार बहनों ने दूसरे जिलों में जाकर प्रशिक्षण दिया।

कार्य योजनाः पूज्य गुरुदेव की उद्घोषणा ''21 वीं सदी नारी सदी'' को चरितार्थ करते हुए प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ छत्तीसगढ़ ने प्रदेश के सभी 28 जिलों में 17 अक्टूबर से 22 अक्टूबर एवं 13 नवम्बर से 22 नवम्बर के बीच दो दिवसीय ''नारी सशक्तीकरण कार्यशालाएँ'' शानदार सफलता के साथ सम्पन्न कीं। इसके लिये पूरे छत्तीसगढ से सक्रिय बहिनों की 4-5 सदस्यों की 23 टोलियाँ बनाई गई और उन्हें ऑन लाईन प्रशिक्षण दिया गया।

विशिष्ट अभिव्यक्तियाँः

राजनाँदगाँवः 'परिवार निर्माण में नारी की भूमिका सर्वोपरि है तथा अच्छे एवं संस्कारित परिवार से ही अच्छे समाज का निर्माण संभव है। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित यह कार्यशाला इस दिशा में उठाया गया सराहनीय कदम है।'-**श्रीमती हेमा देशमुख महापौर, राजनाँदगाँव**

256 बहिनों ने प्रशिक्षण लिया। श्रीमती तुलसी साहू की टोली ने प्रशिक्षण दिया। आयोजन व्यवस्था में श्री नंदकिशोर सुरजन जी के मार्गदर्शन में श्रीमती शीला सोनी, श्रीमती रूपाली गांधी आदि का विशेष सहयोग रहा।

रायपुरः 'समाज निर्माण का आधार है शिक्षा एवं संस्कार। अतः महिलाओं को जितना अधिक हम शिक्षित एवं संस्कारित करेंगे, हम समाज को उतना ही आगे बढ़ायेंगे। इस कार्य में नारी सशक्तीकरण जैसी आवासीय कार्यशालाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगी। मैं इस कार्य के लिए गायत्री परिवार को कोटिशः बधाई देती हूँ।'

श्रीमती किरण नायक, अध्यक्ष छत्तीसगढ़ महिला आयोग। यहाँ 400 बहिनों ने भाग लिया। श्रीमती सरला कोशरिया की टोली ने कार्यशाला का संचालन किया। तैयारियों में श्रीमती अनोखी निषाद, कस्तूरी साहू, संध्या सिन्हा, कविता सिन्हा, पुष्पा वर्मा आदि सहित श्री लच्छूराम निषाद की भूमिका सराहनीय रही। कार्यशाला में रायपुर जिले के अभनपुर, आरंग, धरसींवा, तिल्दा, रायपुर महानगर से खमतराई, तेलीबाँधा, समता कालोनी, सन्तोषीनगर, कुशालपुर, टाटीबंध, दावड़ा कालोनी, बोरियाखुर्द आदि ब्लॉक की बहिनें शामिल हुई।

दुर्ग-भिलाईः में कार्यशाला का संचालन श्रीमती नंदिनी पाटनवार की टोली ने किया।

बिलासपुरः 'जागरण अर्थात् चैतन्यता। हमारे आस-पास होने वाली घटनाओं की जानकारी रखना नकरात्मक घटनाओं को रोकने में अपनी भूमिका नियोजित करना है।'- **डॉ.रजनी पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि डॉ.रश्मि बुधिया** ने महिलाओं के बीच स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाने पर जोर दिया एवं कार्यशाला की प्रशंसा की। 200 बहिनों ने भागीदारी की। व्यवस्था में श्रीमती नंदिनी पाटनवार,रोमा साहू, उर्मिला विश्वकर्मा आदि की प्रमुख भूमिका रही। श्रीमती लक्ष्मी सिंह, श्रीमती वीणा गुप्ता, श्रीमती शांति सिंह एवं श्रीमती ज्योति सिंह की टोली ने प्रशिक्षण दिया।

जांजगीर -चांपाः 'नारियों में शारीरिक एवं मानसिक क्षमता अपार है अपने मनोबल को मजबूत बनाते हुए आगे बढ़ें तो कोई भी कार्य असंभव नहीं है चाहे वह हिमालय की चोटी ही क्यों न हो।'

पर्वतारोही अमृता श्रीवास। श्रीमती नम्रता कन्हैया राठौर,अध्यक्ष जिला पंचायत बलौदा, श्रीमती कांता राठौर, सदस्य राज्य महिला आयोग एवं श्रीमती नम्रता नामदेव, उपाध्यक्ष जिला पंचायत बलौदा ने भी कार्यशाला की भूरि-भूरि प्रसंशा की। श्रीमती पुष्पा वर्मा, श्रीमती कविता सिन्हा, सुश्री मीना ध्रुव की टोली ने कार्यशाला का संचालन किया ।

बलौदाबजारः ऐसी कार्यशालाएं ही नारी जागरण का वास्तविक आधार बन सकती हैं। उपर्युक्त विचार लगभग सभी विशिष्ट अतिथियों ने व्यक्त किये। श्रीमती किरण वर्मा,आर्ट ऑफ लिविंग की प्रमुख, जनपद अध्यक्ष श्रीमती ललीता यादव, महिला उत्थान समिति कीअध्यक्ष श्रीमती नीलम सोनी, खेल अधिकारी सुश्री प्रीति बंछोर, तहसीलदार सुश्री प्रियंका बंजारा, सब इंस्पेक्टर सुश्री वंदना वर्मा, समाज कल्याण विभाग उपसंचालक श्रीमती आशा शुक्ला, योग प्रशिक्षक अखिलेश्वरी शुक्ला सहित अनेक महिला पाषर्दगण उपस्थित रहीं। श्रीमती तुलसी साहू की टोली ने कार्यशाला को संपादित किया। कार्यशाला में बलौदाबाजार, कसडोल, भटगांव, पलारी, सुहेला, भाटापारा ब्लाक की बहनें शामिल हुईं।

बालोदः 'निःसंदेह पारिवारिक एवं सामाजिक उत्थान में नारी शक्ति की भूमिका सर्वविदित है। अतः उनकी शक्ति को जागृत कर समाज निर्माण के लिए प्रेरित करने में यह कार्यशाला अत्यंत सराहनीय है।' -श्री शिबू नायर, नगर पालिका अध्यक्ष, दल्लीराजहरा

अंबिकापुरः भारतीय संस्कृति में नारी को देवी का स्वरूप बताया गया है प्राचीनकाल में उन्हें इसी रूप में मान्यता मिली थी; परंतु वर्तमान में नारी की दुर्दशा चिंतित करने वाली है। अतः कार्यशाला के माध्यम से इन्हें जागरूक कर सशक्त बनाने का यह प्रयास अनुकरणीय है। यह विचार सहकार भारती की महिला प्रदेश प्रमुख डॉ.हिना सिंह जुदेव, सहायक संचालक सांख्यकि सुरभि जैन एवं महिला बाल विकास अधिकारी नीता श्रीवास्तव ने रखे।

कोण्डागांवः गायत्री परिवार के अनेक रचनात्मक कार्यों में से 'नारी जागरण आंदोलन' की यह कार्यशाला नारी शक्ति को मजबूत करने में सफल होगी, साथ ही बस्तर क्षेत्र में व्याप्त कुरीतियों के उन्मूलन में नारी शक्ति की अग्रणी भूमिका हो सके ऐसा हम सभी का प्रयास होना चाहिए।'- **सुश्री लता उसेंडी पूर्व महिला एवं बाल विकास मंत्री।**

नारायणपुरः महिलाओं के सामाजिक विकास के लिए इस तरह की कार्यशाला की अत्यंत आवश्यकता है। गायत्री परिवार द्वारा आयोजित कार्यशाला से निश्चित रूप से महिलाओं को अनेक लाभ मिलेंगे। उक्त विचार कार्यशाला में उपस्थित सभी विशिष्ट अतिथियों (श्रीमती शैल उसेंडी- परियोजना अधिकारी, महिला एवं बाल विकास विभाग, श्रीमती किरण नेलवाल चतुर्वेदी संरक्षण अधिकारी घरेलू हिंसा, श्रीमती बृजेश्वरी रावटे, प्रधानाध्यापक)ने रखे।

इसी प्रकार बस्तर, बेमेतरा, धमतरी, महासमुंद, गरियाबंद, कोरबा, मुंगेली,पेन्ड्रा, गौरेला, मरवाही, रायगढ़, जशपुर, बलरामपुर, सूरजपुर, बैकुंठपुर, कांकेर, दंतेवाडा, सुकमा एवं बीजापुर के प्रशिक्षण शिविरों में भी बहिनों में खूब उत्साह रहा और बड़ी संख्या में बहिनों ने भागीदारी की।

कार्यशाला के विषयः

- नारी जागरण क्यों और कैसे?
- नारी समस्या एवं समाधान
- नारी संगठन निर्माण एवं कार्य योजना।
- गर्भ संस्कार, जन्म दिवस एवं विवाह दिवस संस्कार, बलिवैश्व यज्ञ विधि
- बाल संस्कार शाला
- कन्या कौशल शिविर
- व्यसन मुक्ति आंदोलन आदि विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया गया। संगठन निर्माण के तहत ब्लाक इकाई
- संकुल इकाई •जिला इकाई का निर्माण
- महिला मण्डल का गठन एवं उसकी विभिन्न रचनात्मक गतिविधियों को विस्तार से बताया गया।

बहिनों में भारी उत्साह देखने को मिला। बस्तर जैसे आदिवासी क्षेत्रों सहित प्रत्येक जिले में 200 से 400 तक बहिनों की उपस्थिति रही। बड़ी मात्रा में व्यक्तिगत एवं सामूहिक संकल्प हुए।

छ.ग. के विभिन्न जिलों में आयोजित नारी सशक्तीकरण कार्यशाला का दृश्य।

अंबिकापुर जेल, छत्तीसगढ़ में गर्भवती बहिनों का गर्भोत्सव संस्कार

अंबिकापुर जेल छत्तीसगढ़

माह अक्टूबर 2021 में आदरणीय चिन्मय पंड्याजी, प्रतिकुलपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्री परिवार द्वारा अपने जनसंपर्क और आत्मीयता विस्तार अभियान के तहत छत्तीसगढ़ राज्य के अंबिकापुर संभाग में भ्रमण के दौरान अंबिकापुर जेल के जेल अधीक्षक श्री राजेंद्र गायकवाड से भी मुलाकात की गई चिन्मय जी की बातों से प्रभावित होकर जेल अधीक्षक महोदय ने जेल की महिला विंग में स्थानीय गायत्री परिवार की कार्यकर्ताओं बहनों द्वारा महिलाओं को गुरुदेव के विचारों, मन्त्र लेखन तथा यज्ञ आदि की जानकारी दिए जाने में सहयोग दिया। इसी क्रम में दिनांक 16 नवंबर, 2021 को जेल परिसर में छह गर्भवती बहिनों का गर्भोत्सव संस्कार कराया गया।

इस कार्यक्रम से निराशा एवं अवसाद से जूझ रही महिला बंदियों में उत्साह की झलक दिखी। गुरुदेव के विचारों को सुनने के बाद उनके आँखों से टपक रहे आँसू इस बात के प्रमाण थे कि वह चाहतीं है कि जाने-अनजाने में जो गलती उनसे हुई, उसका प्रभाव उनके बच्चों पर न पड़े और वह प्रार्थना कर रही थी कि परम पूज्य गुरुसत्ता एवं गायत्री मां के संरक्षण में उनके होने वाले बच्चे स्वस्थ और उज्वल भविष्य के साथ इस धरती पर आयें।

गायत्री परिवार द्वारा अंबिकापुर जेल में गर्भवती बहिनों का गर्भ संस्कार

संस्कार के समय महिला वार्ड की पुलिस अधिकारी सुश्री ममता पटेल और श्रीमती फ्लोरा जी, जो पिछले वर्ष अपने अच्छे कार्यों के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित की जा चुकी हैं, उपस्थित थीं, साथ ही अन्य महिला बंदी भी आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित थीं।

श्रद्धेय डा. प्रणव पंड्या जी एवं श्रद्धेया जीजी जी के मार्गदर्शन में परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को मूर्त रूप देने एवं भावी पीढ़ी को सभ्य, सुसंस्कृत, सद्गुणी, प्रखर एवं प्रतिभावान बनाने में आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी प्रकोष्ठ शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार, डा. गायत्री शर्मा, केन्द्रीय समन्यवक द्वारा गर्भोत्सव संस्कार कार्यक्रम के माध्यम से देश-विदेश में लाखों परिजनों को प्रशिक्षित एवं गर्भवती महिलाओं को लाभान्वित किया जा चुका है।

छत्तीसगढ़ प्रांत में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी के अंतर्गत इस प्रकार नित-नए कार्यक्रमों को करने-कराने एवं इस कार्य में लगे गायत्री परिवार के प्रांतीय एवं सह समन्वयको एवं परिजनों को लगातार प्रोत्साहित करने का श्रेय छत्तीसगढ़ की प्रांतीय समन्वयक श्रीमती सरला कोसरिया एवं श्रीमती रुपाली गांधी को जाता है जिन्होंने विभिन्न स्कूल, कॉलेजेस, यूनिवर्सिटी, मेडिकल कॉलेज, डॉक्टर्स, नर्सिंग होम, सामाजिक संस्थाओं, क्लब्स आदि में इस कार्यक्रम को फैला कर एक वृहद रूप दे दिया है।

नवरात्र के पावन पर्व में 1500 कन्याओं का पूजन

सारण, छपरा। बिहार

दिनांक 7 अक्टूबर से आश्विन नवरात्र में सारण, छपरा गायत्री विद्यापीठ संकट मोचन मन्दिर कोणार्क प्रांगण में महिला मण्डल के परिजनो ने गायत्री मंत्र लेखन का कार्य एवं गायत्री मंत्र की साधना की। इस अवसर पर गायत्री मंत्र लेखन की 500 पुस्तिका लिखी गयी। पूर्णाहुति के दिन 1500 कुंवारी कन्याओं का पूजन एव भोजन कराया गया। इस आयोजन को करने के लिए विक्रमाजी वरनवाल की देख-रेख में प्रज्ञा मण्डल कोपा एवं प्रज्ञा मण्डल दाउदपुर के परिजन एवं महिला मण्डल की बहनें परिजन श्री रामप्रवेश चौबेजी-जज साहब, आदि के सहयोग के यह कार्यक्रम सफल रहा।

भूल सुधार

प्रज्ञा अभियान के 16 अक्टूबर 2021 के अंक में पृष्ठ संख्या 5 पर 'गायत्री परिवार का गौरव' शीर्षक से एक समाचार प्रकाशित हुआ है, जिसमें भूलवश श्री सुहास एल वाय को टोक्यो पैरालंपिक में स्वर्ण पदक विजेता लिखा गया है। वस्तुतः वे उस प्रतियोगिता में रजत पदक विजेता रहे हैं। इस भूल के लिए हमें खेद है।

-सम्पादक, प्रज्ञा अभियान

प्रकाश पर्व के रूप में मनाई श्रीगुरुनानक देव जी एवं महारानी लक्ष्मीबाई की जयन्ती

गायत्री परिवार अलवर। राजस्थान

आज दिनांक 19 नवम्बर 2021 शुक्रवार को प्रकाश पर्व- महारानी लक्ष्मीबाई एवं श्रीगुरुनानक देव जी की जयंती के अवसर पर महिला मण्डल-गायत्री परिवार अलवर ने शहर के मध्य अग्रसेन सर्किल पर श्रीमती कुंती अग्रवाल के नेतृत्व में दीप यज्ञ समपन्न किया। दीप यज्ञ में मुख्य अतिथि डॉ. श्री एस सी मित्तल एवं श्रीमती मित्तल, श्रीमती पदमा डे और श्रीमती ममता गुप्ता सहित महिला मण्डल की अनेक बहिनें और गायत्री परिजन उपस्थित रहे। श्री श्याम सुंदर शर्मा जी ने रानी लक्ष्मीबाई के जीवन के प्रेरणादायक प्रसंग बताये। इसके साथ ही अखिल विश्व गायत्री परिवार शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के आवाहन पर अलवर में गायत्री परिवारजनों ने अपने-अपने घरों पर 5-5 दीपक प्रज्वलित करके प्रकाश पर्व मनाया।

प्रकाश पर्व पर अलवर गायत्री परिवार के परिजन द्वारा दीपयज्ञ

श्री श्याम सुंदर शर्मा जी ने कहा कि महारानी लक्ष्मीबाई ने स्वतंत्रता सेनानियों का नेतृत्व कर देश स्वतंत्र कराने में अभूतपूर्व योगदान दिया तथा हम सभी के जीवन में स्वतंत्रता का प्रकाश दिया। इसलिए रानी लक्ष्मीबाई के जन्मदिवस को प्रकाश पर्व के रूप में गायत्री परिवार मनाता है और युवा बहिनों, महिलाओं को रानी लक्ष्मीबाई के जीवन से प्रेरणा लेकर आज के समय की सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों से लड़ने के लिए प्रेरित करता है।

प्रकाश पर्व पर पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य घाट, वाराणसी पर सजी भव्य दीप मालिका

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

सांस्कृतिक, धर्मार्थ एवं पर्यटन मंत्री उत्तर प्रदेश माननीय श्री नीलकंठ तिवारी जी द्वारा गायत्री परिवार के संस्थापक एवं परमपूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के नाम एक गंगा घाट के नामकरण की सूचना दिए जाने के उपरांत वाराणसी के गायत्री परिवार में विशेष उत्साह एवं प्रसन्नता व्याप्त है। विश्व प्रसिद्ध देव दीपावली, प्रकाश पर्व - श्रीगुरुनानक देव जी एवं महारानी लक्ष्मीबाई की जयन्ती पर दिनांक 19.11.2021 दिन शुक्रवार को पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य घाट ; राजघाट से खिड़किया घाट तक के तट पर दस हजार दीप प्रज्वलन की जिम्मेदारी जिला प्रशासन द्वारा गायत्री परिवार वाराणसी को मिली थी। परिजनों ने असीम उत्साह एवं उमंग के साथ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य घाट पर परमपूज्य गुरुदेव, माता भगवती देवी, माँ गायत्री एवं मशाल का आकर्षक मंच बनाया, रंगोली एवं दीपमाला से घाट को सजाया। जिला समन्वयक पंडित गंगाधर उपाध्याय के संयोजन में सायं 5:30 बजे माँ गंगा, माँ गायत्री एवं परमपूज्य गुरुदेव-वंदनीया माताजी की भव्य आरती उतारने के उपरान्त वैदिक मंत्रोच्चार के साथ गायत्री साधकों ने अपने साथ लाये 2400 दीपकों सहित कुल 12400 दीपक प्रज्वलित किये और पूज्य गुरूदेव के उद्घोष-मनुष्य में देवत्व एवं धरती पर स्वर्ग के अवतरण को पूर्ण करने का संकल्प दोहराया। कार्यक्रम का संयोजन गायत्री परिवार रचनात्मक ट्रस्ट वाराणसी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में पंडित गंगाधर उपाध्याय, श्री बेचू लाल, अवधेश सिंह, डॉक्टर भगवान दास, राम कुमार दुबे, सुमन उपाध्याय,श्रीमती पुष्पा, सावित्री, संगीता, पूनम, वैदेही, कुमारी अंजनी, आरती, सहित वाराणसी के सैकड़ों गायत्री साधकों का योगदान रहा।

वाराणसी में प्रकाश पर्व पर पं.श्रीराम शर्मा आचार्य घाट पर रंगोली एवं दीप महायज्ञ का दृश्य

रानी लक्ष्मीबाई जयंती पर भगवानपुर में हुआ दीपाञ्जलि कार्यक्रम

गायत्री चेतना केन्द्र, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री चेतना केंद्र सीतापुर के संयोजन में सीतापुर सिटी रेलवे स्टेशन के निकट स्थित भगवानपुर गांव में पाँच दिवसीय गायत्री महायज्ञ एवं श्रीमद् पावन प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का समापन 18 नवंबर को अमर वीरांगना महारानी लक्ष्मीबाई जी की जयंती की पूर्व संध्या पर दीपाञ्जलि स्वरूप दीप यज्ञ एवं तरुप्रसाद के रूप में लोगों को फलदार, शोभाकार व औषधीय महत्व के पौधे बाँट कर किया गया।

डॉ0 हिमांशु त्रिवेदी ने भारतीय संस्कृति की गौरव गरिमा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये उत्कृष्ट नारियों और महापुरुषों के चरित्रों से नई पीढ़ी को अवगत कराने की आवश्यकता के विषय में बताया। कार्यक्रम में प्रतिदिन प्रातः कालीन प्रज्ञायोग कराया गया। विद्यारंभ संस्कार तथा दीक्षा संस्कार भी संपन्न हुए। समस्त आयोजन में जिला गायत्री गायत्री परिवार ट्रस्ट सीतापुर के मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी गंगासागर वर्मा, गायत्री चेतना केंद्र सीतापुर के व्यवस्थापक संत कमल, आयोजन मंडल के गोपीकृष्ण मौर्य, शिवम मौर्य, महिला मंडल की अनीता मौर्य, अनुराधा मौर्य, मीना वर्मा, कृष्णा, रोशनी, खुशी आदि का विशेष योगदान रहा।

रानी लक्ष्मीबाई जयंती पर दीपयज्ञ करते गायत्री परिजन एवं तरुपूजन के बाद तरु प्रसाद अपने घर ले जाते संकल्पित परिजन

गायत्री चेतना केन्द्र, मोडासा की प्राण प्रतिष्ठा का तीसरा वार्षिकोत्सव मनाया।

मोडासा। अरवल्ली

यह केन्द्र मोडासा क्षेत्र के लोगों में मानवता की ज्योति जला रहा है।

19 नवम्बर।2021 के दिन गायत्री चेतना केन्द्र मोडासा का प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव मनाया गया। तीन वर्ष पूर्व मोडासा में देव दिवाली के दिन डॉ. चिन्मय पण्डयाजी के कर कमलों से गायत्री चेतना केन्द्र की प्राण प्रतिष्ठा हुई थी। तब से यह जन जागृति केन्द्र मिशन की गतिविधियों एवं वैज्ञानिक आध्यात्मवाद के प्रतिपादन में सक्रिय रूप से काम कर रहा है। लोगों के मन में मिशन की विचारधारा एवं मानव सेवा की भावना जगाने के लिए पूरे मोडासा शहर एवं आसपास के गाँवों में भी तरह- तरह के आन्दोलन चलाए जा रहे हैं, इसमें आओ गढ़े संस्कारवान पीढ़ी, गर्भ संस्कार, पर्यावरण बचाओ, वृक्ष गंगा अभियान, युवा जागृति, नारी जागरण, बाल संस्कार केन्द्र, नशा मुक्ति, भारतीय संस्कृति ज्ञान विस्तार, बच्चों में कौशल विकास, छात्रों को मुफ्त पूरक शिक्षा और वायु प्रदूषण के खिलाफ कोरोना महामारी में औषधीय जड़ी- बूटियों से युक्त हवन सामग्री से वातावरण को स्वच्छ करने के उद्देश्य से घर- घर जाकर गायत्री यज्ञ आन्दोलन आदि प्रमुख हैं। इसके अलावा युवाओं (GPYG) द्वारा पिछले उन्नीस रविवारों से वृक्षों की सुरक्षा के लिए प्राणवान रविवार अभियान के तहत जागरूकता अभियान चला रहे हैं।

वार्षिकोत्सव कार्यक्रम से पूर्व दीपावली से देव दीपावली तक के 15 दिनों में परिजनों ने विशेष गायत्री मंत्र लेखन अभियान चलाया। वार्षिकोत्सव देव दीवाली के दिन गायत्री चेतना केन्द्र में आयोजित पंचकुण्डीय गायत्री यज्ञ में सभी ने आहुति के साथ मंत्र लेखन अभियान का समापन किया।

सायं दीपयज्ञ में दीपमाला एवं सामूहिक आरती के साथ प्रकाश पर्व श्री गुरु नानक देव जी एवं रानी लक्ष्मीबाई की जयंती मनाई गई।

कार्यक्रम में युवाओं सहित बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया और आत्म उत्थान एवं समाज निर्माण के कार्यों में तन मन धन से सहयोग करने का संकल्प लेते हुए वार्षिकोत्सव मनाया।

मोडासा गायत्री चेतना केन्द्र का वार्षिकोत्सव पर्व पर भाग लेते गायत्री परिवार के परिजन

समाज निर्माण के लिए 71 गाँवों में आयोजित हुआ दीपोत्सव का कार्यक्रम के साथ नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ संपन्न

घुसरी मिश्र, देवरिया। उत्तर प्रदेश

शान्तिकुञ्ज स्थापना के स्वर्ण जयंती वर्ष में देवोत्थान एकादशी पर गायत्री शक्तिपीठ, घुसरी मिश्र, देवरिया द्वारा नौ कुण्डीय महायज्ञ तथा एक साथ 71 गाँवों/नगरों में दीपोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया। देव स्थान, घरों व दुकानों में निश्चित समय सायं सात बजे गायत्री मंत्र के साथ दीपक श्रृंखला बनाकर जलाए गए। गायत्री शक्तिपीठ घुसरी मिश्र में दीपोत्सव कार्यक्रम का उद्घाटन भारतीय जनता पार्टी के पूर्व प्रदेश प्रवक्ता एवं मुख्यमंत्री के सूचना सलाहकार शलभ मणि त्रिपाठी ने किया। उन्होंने कहा कि व्यक्ति व समाज में देवत्व का विकास करने के लिए सांस्कृतिक जागरण होते रहना चाहिए। निश्चित तौर पर शक्तिपीठ घुसरी मिश्र के स्वयंसेवकों द्वारा समाज निर्माण के लिए किया गया दीपोत्सव का कार्य समाज के लिये अनुकरणीय है। मुख्य अतिथि का स्वागत पंडित दरोगा मिश्र व डॉ. अरविन्द पाण्डेय ने तिलक, माल्यार्पण तथा उपवस्त्र ओढ़ाकर किया। इस दौरान पड़री बाजार, महुई पांडेय, कोला, दुबौली, सुरहा, रजवल, कम्हरिया, जमुई, कोल्हुआ, धोबी,भरथुआ, पुरैना, रायपुरवा, मझौवा, भटनी नगर, सलेमपुर नगर, पड़री तिवारी, मुजुरी खुर्द, मनिहारी, परसिया भंडारी, परसिया मिश्र, पांडेय गोंदी, पड़री झिल्लीपार, बैदौली, तुलसी पिपरा, खखड़ी, बकुची मिश्र, मड़कड़ा, मरकड़ा, महुई मिश्र, जिगना दीक्षित, महादेवा, मझवलिया आदि 71 गाँवों, नगरों में दीपोत्सव कार्यक्रम आयोजित हुआ। घुसरी मिश्र में 51 हजार गायत्री मंत्र का जप हुआ एवं नौ कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में लोगों ने बढ़-चढ़कर सहभागिता की। मुख्यमंत्री के सूचना सलाहकार शलभ मणि त्रिपाठी ने भटनी नगर स्थित ठाकुर जी कुटी मंदिर, जलपा माता मंदिर, शहीद स्मारक आदि स्थानों पर दीपोत्सव कार्यक्रम में सहभागिता की। इस दौरान प्रमुख रूप से गायत्री शक्तिपीठ घुसरी मिश्र के व्यवस्थापक तथा तमाम परिजन उपस्थित रहे। समस्त यज्ञ - कर्मकांड एवं संगीत - भजन का कार्यक्रम प्रज्ञा विवेक मिश्र ने प्रस्तुत किया तथा तबले पर सहयोग राजाराम ने किया।

घुसरी मिश्र-देवरिया में दीपयज्ञ में भाग लेते परिजन

गायत्री परिवार,टाटानगर के युवाओं ने मनाया-बाल दिवस

जमशेदपुर। झारखण्ड

जमशेदपुर, गायत्री परिवार टाटानगर, दिया समूह नवयुगदल के युवाओं द्वारा 14 नवम्बर बाल दिवस के अवसर पर सुबह 9 बजे बेक्को गांव में बालसंस्कार शाला के बच्चों के बीच चित्रांकन प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता कराई गई, साथ ही पुरस्कार वितरण किया गया । दोपहर 3 बजे से गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में बच्चों के लिए निशुल्क कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ- सम्मानित अतिथि के रूप में हरिजन मध्य विद्यालय भालुबासा के प्रधानाध्यापक श्री किशोर शर्मा, प्रज्ञा महिला मंडल की अध्यक्षा बहिन रेखा शर्मा, प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ झारखण्ड के संयोजक संतोष कुमार राय और धर्मेंद्र सिंह ने सामुहिक रूप से दीप प्रज्वलन कर किया। मुख्य अतिथि श्री किशोर शर्मा जी ने सामाजिक उन्नति की दिशा में गायत्री परिवार के युवाओं द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। प्रशिक्षण केंद्र में शिक्षक के रूप में प्रियंका गुप्ता, हिमानी महतो, रूबी शर्मा, संगीता शाल, दीपक गुप्ता, रणबीर सिंह अपना समयदान कर रहे हैं। आयोजन की सफलता में श्री अमित वर्मा, अमरजीत कुमार, के पी मालाकार, कार्तिक जेना आदि सभी युवा साथियों का योगदान रहा।

दिया समूह द्वारा बाल दिवस मनाते गायत्री परिजन

जिस देश समाज में लोगों का आंतरिक स्तर नीचा रहता है, वहाँ कोई महत्त्वपूर्ण प्रगति दृष्टिगोचर नहीं हो सकती। -अखण्ड ज्योति मई-1963

दे.सं.वि.वि.के पूर्व विद्यार्थियों ने चेतना दिवस पर की 'दिया धनबाद' की स्थापना

धनबाद। झारखण्ड

गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्या जी के 72वें जन्म दिवस 'चेतना दिवस' के शुभ अवसर पर गायत्री चेतना केन्द्र, कोयला नगर, धनबाद में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों द्वारा जिले के युवाओं को स्वस्थ, शालीन, सेवाभावी एवं स्वावलंबी बनाने हेतु डिवाइन इंडिया यूथ एसोसिएशन, धनबाद 'दिया धनबाद' की स्थापना की गई एवं साथ ही उनके 72 वसन्त के प्रतीक 72 औषधीय पौधों का रोपण भी किया गया। दिया के उद्देश्य एवं भावी कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण लघु नाटिका के माध्यम से किया गया तथा योग, मनोविज्ञान, गोविज्ञान, नारी सशक्तिकरण, बाल संस्कारशाला, नशा उन्मूलन, पर्यावरण एवं स्वावलंबन शीर्षक पर विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं आगंतुक गायत्री परिजनों द्वारा व्याख्यान दिया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से गायत्री परिवार, धनबाद के जिला समन्वयक श्री विभूति शरण सिंह, कोल इंडिया

पौधारोपण के लिए तैयार 'दिया' धनबाद के युवा

के पूर्व मुख्य महाप्रबंधक श्री गोपाल बिहारी लाभ, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पूर्व विधार्थी श्री दीपांकर अत्रेय (एमएससी क्लिनीकल साइकोलोजी 2018), श्री शिवचन्द्र जी (एमसीए 2018), श्री सुरेन्द्र जी (बीएड् 2018), श्री अश्विनी जी (एमए योग 2018), सुश्री ऋचा रानी (पीजीडीवाई 2018), श्रीमती वसुंधरा जी (बीएड् 2020) एवं स्थानीय परिजन उपस्थित थे ।

हजारीबाग के केन्द्रीय कारागार में यज्ञ, 22 सौ कैदी भागीदार

हजारीबाग। झारखंड

गायत्री परिवार हजारीबाग के प्रयास से 14 नवम्बर को लोकनायक जयप्रकाश नारायण केन्द्रीय कारागार हजारीबाग, झारखंड में अधीक्षक कुमार चन्द्रशेखर व जेलर श्री श्रीकांत जी के नेतृत्व में पुरुष वार्ड में पाँच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ, दीक्षा एवं यज्ञोपवीत संस्कार तथा महिला वार्ड में दीप यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 2200 कैदियों ने भागीदारी की। जेल के अधिकारियों सहित सभी कैदियों को युगसाहित्य वितरित किया गया तथा उन लोगों के जीवन में सुधार लाने के उद्देश्य से जेल में युगसाहित्य की एक लाइब्रेरी भी स्थापित करवायी गयी। गायत्री परिजनों ने कैदियों को सही जीवन जीने के सूत्र बताये और सभी को आज और अभी से सार्थक जीवन के पथ पर चलने का आग्रह किया। परिजनों के स्नेहपूर्ण संबोधनों का अच्छा प्रभाव पड़ा। कई कैदियों ने नशा छोड़ने, वृक्षारोपण करने, असहायों की सहायता करने, मन्त्र लेखन आदि का संकल्प लिया। 1200 कैदियों ने इस आयोजन हेतु मन्त्रलेखन किया।

इस कार्यक्रम में श्री प्रदीप कुमार ढींगरा एडवोकेट, दिल्ली (1 लाख), श्री दिनेश शर्मा , गाजियाबाद (60 हजार), श्री देवज्योति चक्रवर्ती (65 हजार) के सहयोग से 2,25,000 रुपये का साहित्य वितरित किया गया। कार्यक्रम को लालती देवी एवं उनकी सक्रिय टीम ने संचालित किया।

हजारीबाग के कारागार में यज्ञ एवं लाइब्रेरी स्थापना करते परिजन

उपलब्धियाँ

* 1200 कैदियों ने किया मन्त्रलेखन
* 2,25,000 रुपये का साहित्य वितरण हुआ
* 2200 कैदियों ने की भागीदारी
* अधिकांश ने लिया सन्मार्ग अपनाने का संकल्प

ठाणे में गायत्री ज्ञान मन्दिर एवं आरोग्य केन्द्र का उद्घाटन, दीपावली स्नेह मिलन का भी आयोजन

आरोग्य केन्द्र का उद्घाटन एवं दीपावली स्नेह मिलन समारोह में एकत्रित परिजन

ठाणे। महाराष्ट्र

पूज्य गुरुदेव के विचार को जन जन तक पहुँचाकर उनमें नवजागृति लाने के उद्देश्य से 14 नवम्बर को भवानी चंबर, चरई, ठाणे वेस्ट में गायत्री ज्ञान मंदिर एवं आरोग्य केन्द्र का विधिवत उद्घाटन किया गया। इस केन्द्र में पूज्य गुरुदेव जी के द्वारा रचित साहित्य की हिंदी, मराठी, इंग्लिश एवं गुजराती में पुस्तकें मिलेंगी। साथ ही शांतिकुंज, हरिद्वार द्वारा बनाई गई सारी आयुर्वेदिक दवाइयाँ एवं सभी प्रकार की दैनिक पूजा सामग्री व हवन सामग्री भी उपलब्ध रहेगी। साथ ही नगरवासियों के लिए सभी तरह के संस्कार संपन्न करने की व्यवस्था भी सुलभ रहेगी।

चिकित्सा के लिए गायत्री परिवार के डॉक्टरों द्वारा निःशुल्क चिकित्सालय भी यहाँ से चलाया जाएगा। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार द्वारा आरम्भ किया गया निःशुल्क सेवा का यह एक अनोखा प्रोजेक्ट है।

ज्ञान मंदिर के उद्घाटन के साथ ही ज्ञानदेव सेवा मंडल हॉल में गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा दीपावली स्नेह मिलन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री गौरीशंकर सैनी जी द्वारा आत्मीयता विस्तार और आत्मपरिष्कार के सूत्र बताए गए। साथ ही गायत्री परिवार मुंबई के प्रमुख श्री मनुभाई पटेल ने भी अपने विचार साझा किए। मुंबई में प्रस्तावित अश्वमेध यज्ञ की भी चर्चा की गयी। सभी परिजनों ने घर घर युग साहित्य की स्थापना कराने का संकल्प लिया।

स्वास्थ्य शिविर में 177 रोगियों ने लिया लाभ

अलीराजपुर। मध्यप्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ जोबट के द्वारा दिनांक 17 एवं 18 नवंबर को दो दिवसीय स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें 177 रोगियों ने स्वास्थ्य परीक्षण करवाया। रोगियों का चेकअप भोपाल से आए नेचुरोपैथी एवं जड़ी-बूटी विशेषज्ञ डॉक्टर एन. यू. मलिक द्वारा किया गया। शिविर में जटिल बीमारी जोड़ों का दर्द, शुगर, डायबिटीज, चर्म रोग, दमा, आँखों की तकलीफ इत्यादि रोगों का चेकअप कर आवश्यकता अनुसार दवाइयाँ दी गईं। शिविर की उपयोगिता को समझकर सभी लोगों ने विचार व्यक्त किया कि ऐसा शिविर दो-तीन माह में एक बार अवश्य होना चाहिए।

शिविर में जोबट नगर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉक्टर आराम पटेल, डॉ अनु मलिक, जिला समन्वयक संतोष वर्मा, धर्मदा ट्रस्ट के अध्यक्ष राजेन्द्र जी एवं ट्रस्टी अनिल श्रीवास्तव समेत कई गणमान्यों ने भाग लिया। समापन पर गायत्री शक्तिपीठ के व्यवस्थानक डॉक्टर शिव नारायण सक्सेना, शिवराम वर्मा, मांगीलाल डाबर, रजनीकांत वाणी, अनिल श्रीवास्तव, रमेश टवली व अशोक वाणी ने डॉक्टर मलिक को पुष्पहार, शॉल, श्रीफल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ. मलिक जी को सम्मानित करते परिजन

प्रखर दिव्यात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

राजिम। (छत्तीसगढ़)

गायत्री शक्तिपीठ राजिम के संस्थापक ट्रस्टी श्री गजेन्द्र सिन्हा का 15 अक्टूबर को आकस्मिक निधन हो गया। वे मिशन के सक्रिय एवं जुझारू कार्यकर्ता थे। उन्होंने पाण्डुका, मगरलोड़ ब्लॉक में गायत्री परिवार का विस्तार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। गरियाबन्द जिले के सभी परिजनों ने राजिम में उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी।

हटा (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ के भूमिदान कर्ता एवं स्वतंत्रता सेनानी स्वर्गीय जगमोहन श्रीवास्तव की धर्मपत्नी श्रीमती सरोज रानी श्रीवास्तव 29 अक्टूबर 2021 को 86 वर्ष की आयु में गुरु सत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गयी। उल्लेखनीय है कि हटा में परम पूज्य गुरुदेव के आगमन के पूर्व उनके अपने गृह निवास में 1971 में गायत्री माता की जो मूर्ति पूजित की गई थी, उसकी स्थापना प्रज्ञा पीठ के रूप में युग ऋषि ने 1982 में की थी।

नागदा (मध्य प्रदेश)

गायत्री रचनात्मक केन्द्र नागदा के संस्थापक और रचनात्मक ट्रस्ट नागदा के प्रमुख प्रबंध ट्रस्टी श्री दुर्गा बक्स सिंह जी का देवलोक गमन हो गया है। वे गायत्री परिवार उज्जैन जिले के स्वावलंबन प्रकोष्ठ के भी संस्थापक थे। स्वावलंबन और मिशन की रचनात्मक गतिविधियों के संचालन के लिए उन्होंने नागदा में गायत्री रचनात्मक केंद्र की स्थापना की और करीब 25 वर्ष से शाकल्य,साबुन,धूप बत्ती, अगरबत्ती, आंवले के उत्पाद, आदि का निर्माण और प्रशिक्षण कराते रहे।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़)

अखिल विश्व गायत्री परिवार जिला रायगढ़ एवं जिला जांजगीर चांपा के वरिष्ठतम कार्यकर्ता स्वर्गीय प्रहलाद राय अग्रवाल जी की पावन स्मृति में चंद्रपुर बगीचा स्थल में दिनांक 10 नवंबर 2021 को गायत्री यज्ञ के साथ श्रद्धांजलि शोक सभा का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार चेतना केंद्र चंद्रपुर के अध्यक्ष श्री राम अवतार अग्रवाल जी ने अपने पूज्य पिताजी स्वर्गीय प्रहलाद राय अग्रवाल जी के नाम से गायत्री परिवार के द्वारा गरीबों में कम्बल बाँटें।

गुरुदेव के साहित्य को विस्तार दे रहा है "ज्ञान यज्ञ सोशल मीडिया" अभियान

"ज्ञान यज्ञ सोशल मीडिया" अभियान गायत्री परिवार के परिजनों द्वारा चलाया जाने वाला एक सफल प्रयास है। इस अभियान का उद्देश्य परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित 3200 पुस्तकों के दिव्य एवं अतुल ज्ञान को विश्वभर में जन-जन तक पहुँचाना है। इस अभियान के अंतर्गत प्रतिदिन एक पुस्तक का परिचय दिया जाता है जिसमें पुस्तकों के विषय में निम्नलिखित सामग्री रहती है :-

1) पुस्तक की AWGP literature लिंक
2) पुस्तक का सम्पूर्ण ऑडियोबुक
3) पुस्तक और लेखक का अपरिचितों \जन समुदाय के लिए परिचय
4) पुस्तक का चलचित्र \वीडियो परिचय
5) पुस्तक के सद्वाक्य तथा
6) पुस्तक के नित्य होने वाले स्वाध्याय के zoom लिंक को उत्पन्न करना शामिल है।

यह सामग्री Facebook, WhatsApp, Twitter, LinkedIn, YouTube के लिए तैयार की जाती है और वहां प्रकाशित की जाती है।

यह अभियान अभी तक 10 भारतीय भाषाओं में चल रहा है तथा आगे इसको अन्य भारतीय भाषाओं एवं अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में प्रकाशित किए जाने की भी योजना है। इस अभियान से जुड़े गायत्री परिजनों का योगदान अत्यंत सराहनीय है। अतः इस अभियान के माध्यम से विचार क्रांति अभियान को भी अधिक गति मिल रही है।

14 से 17 आयु वर्ग के विद्यार्थियों हेतु रविवासरीय कार्यशालाएँ

गायत्री शक्तिपीठ, अलवर। राजस्थान

युवा प्रकोष्ठ(दीया)का उद्देश्य गायत्री परिवार के संस्थापक परम पूज्य गुरुदेव, युगऋषि पंडित श्री राम शर्मा आचार्य जी के सपनों का भारत बनाने के लिए जिम्मेदार नागरिक तैयार करना है। इस दिशा में गायत्री परिवार अलवर के युवाओं द्वारा शक्तिपीठ अलवर पर 14 से 17 आयु वर्ग के विद्यार्थियों की एक कार्यशाला प्रति रविवार को 11:00 बजे से 12:30 बजे तक संचालित की जा रही है। जिसमें विद्यार्थियों को नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक व राष्ट्रीय सरोकारों से परिचित कराया जाता है। साथ ही विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से शिक्षा के साथ विद्या भी के रूप में व्यक्तित्व निर्माण, जीवन निर्माण संबंधी मार्गदर्शन दिया जाता है।

श्री महेंद्र सिंह, श्री अरुण खंडेलवाल, डॉ.सोमदत्त गुप्ता, श्री राजेन्द्र मीणा, श्री अमित वशिष्ठ आदि द्वारा विद्यार्थियों को पीपीटी व प्रोजेक्टर के माध्यम से नवीनतम जानकारी दी जाती है। जूम मीटिंग्स द्वारा प्रतिभागियों को शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार से भी जोड़ा जाता है। विशेष बात यह है कि कार्यशाला में विद्यार्थियों के अभिभावक भी साथ रहते हैं। ज्ञात हो कि

कार्यशाला में भाग लेते बच्चें

गायत्री परिवार अलवर, महिला मंडल के द्वारा विगत वर्षों से 6 से 13 वर्ष के बालकों के लिए प्रति शुक्रवार ऑन लाइन बाल संस्कार शाला संचालित होती है। इन्हीं बालकों को आगे चलकर इन कार्यशालाओं में जोड़ा जा रहा है।

वाराणसी जोन की एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न
प्रारंभ होंगे कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर

बलिया, वाराणसी। उत्तर प्रदेश

अखिल विश्व गायत्री परिवार के तत्वाधान में वाराणसी जोन द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में वाराणसी, गोरखपुर उपजोन के क्रमशः प्रयागराज, बांदा, कौशाम्बी, चित्रकूट, आजमगढ, गाजीपुर, बलिया, मऊ, चन्दौली, मिजार्पुर, सोनभद्र, भदोही, जौनपुर, वाराणसी, महाराजगंज , देवरिया, कुशीनगर, सिद्धार्थ नगर, संत कबीर नगर जनपदों से लगभग 600 प्रमुख ट्रस्टी, ब्लाक प्रतिनिधि, समन्वयकों व कार्यकताओं ने प्रतिभाग लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य जन-सम्पर्क अभियान के माध्यम से वर्ष 2025 तक ब्लॉक/ग्राम पंचायतों के प्रत्येक गाँव व शहर में यज्ञ/गायत्री व परमपूज्य गुरुदेव के विचारों को स्थापित कर मण्डलों का गठन करना था। कार्यशाला में वाराणसी जोन के समन्यवक प्रसेन सिंह जी ने बताया कि धरती को स्वर्ग बनाने के लिए अपने व्यक्तित्व को निखारना आवश्यक है। पूज्य गुरुदेव युग ऋषि पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और साधना पर विशेष महत्व देते हुये शक्तिपीठों व संस्थानों को जन जागरण का केन्द्र बनाने के निमित्त संकल्प लिया था। उन्होंने बताया कि संगठन को मजबूत करने के लिए उपजोन व जिला स्तरीय प्रशिक्षण प्रारम्भ करना आवश्यक है। चित्रकूट उपजोन के समन्वयक श्री राम मिलन पाठक ने गॉवों में सम्पर्क के लिए यज्ञ और गायत्री को घर-घर पहुँचाने की योजना के विषय में बताया। वाराणसी उपजोन समन्वयक श्री सुरेश चंद्र यादव ने गुरुदेव द्वारा रचित 3200 पुस्तकों का

कार्यशाला में भाग लेते परिजन

उल्लेख करते हुए स्वाध्याय की आवश्यकता समझाई। गोरखपुर उपजोन के समन्वयक श्री प्रभा शंकर द्विवेदी जी ने समयदान/अशंदान/श्रमदान का महत्व बताया। इसी क्रम में सभी जिलों से आये समन्यवकों ने भी अपने विचार रखे।

कार्यशाला में सभी जिला समन्वयक, ब्लाक प्रतिनिधियों ने आपस में सलाह व विचार-विमर्श कर शक्तिपीठों व प्रज्ञा संस्थानों पर कार्यकर्ता प्रशिक्षण शिविर चलाने का निर्णय लिया। दिसम्बर माह से उपजोन स्तर पर प्रशिक्षकों को तैयार किया जायेगा। कार्यक्रम में गंगाधर उपाध्याय, प्रमोद राय, दया शंकर जी, मिठाईलाल, बलिराम यादव, रामसुख यादव, अशोक मिश्रा, अशोक तिवारी, व समस्त जिला समन्यवक उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अन्त में गायत्री शक्तिपीठ के प्रमुख ट्रस्टी श्री विजेन्द्र नाथ चौबे जी ने सभी आगन्तुक साधकों का पुष्प एवं तिलक लगाकर स्वागत एवं आभार व्यक्त किया।

देव ग्राम घोटिया में दिव्य दम्पति शिविर सम्पन्न

देव ग्राम घोटिया, खरगोन। मध्यप्रदेश

खरगोन, देव ग्राम घोटिया में बड़े ही उत्साहपूर्ण वातावरण में दिव्य दम्पति शिविर सम्पन्न हुआ। अखिल विश्व गायत्री परिवार के कार्यों को भारत के 25 राज्यों में पहुंचाने वाले गायत्री धाम सेंधवा के प्रमुख श्री मेवालाल जी पाटीदार एवं मीरा दीदी ने पति पत्नी का वैवाहिक जीवन आदर्श कैसा

घोटिया-दम्पत्ति शिविर में मार्गदर्शन देते सेंधवा के श्री मेवालाल पाटीदार व अन्य सहयोगी

हो को बताते हुए कहा कि जीवन में संयम, सेवा, सहिष्णुता की साधना करनी पड़ती है। दांपत्य जीवन में एक दूसरे को सम्मान देना व एक दूसरे के दुःख-सुख को समझना और सभी रिश्ते नातों को आत्मीयता से निभाना होता है। गाँव में एक आदर्श वातावरण बने जिससे सशक्त राष्ट्र का निर्माण हो सके। व्यक्ति के गुण, कर्म, स्वभाव को देखो उसकी संपत्ति उसकी भौतिकता को मत देखो, समाज की एक व्यवस्थित कार्यप्रणाली हो जिसमें सभी रीति-रिवाजों के साथ; किन्तु कम खर्च में बिना दिखावे के आदर्श विवाह समारोह आयोजित हों और समाज का व्यर्थ में खर्च हो रहा धन राष्ट्र निर्माण में लगे।

सभी के उत्तम स्वास्थ्य एवं मंगलमय जीवन की प्रार्थना के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। सौरभ,सुनीता, प्रभा जी ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। संचालन श्री कड़वा जी व भूमिका योगेश पाटीदार ने प्रस्तुत की व आभार प्रदर्शन श्री संतोष जी पाटीदार ने किया। कार्यक्रम में पिपरी इच्छापुर की मातृशक्ति के साथ ही बड़ी संख्या में समाज जन एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्ता भाई बहनों की उपस्थिति रही। आयोजन में ग्राम घोटिया के श्री परशु पाटीदार के साथ ग्राम के युवाओं ने तन मन धन से भागीदारी कर सहयोग प्रदान किया ।

कार्यक्रम में जय श्री अंबे सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा सृजनात्मक एवं सेवा कार्य में लगे ग्रामीणों का सम्मान भी किया गया।

- श्री मायाराम जी पाटीदार ने अपने माता पिता की न्योछावर भेंट के रूप में 16000 की राशि अंबिका गुरुकुल के निर्माण के लिए समर्पित की उनका सम्मान किया गया।
- गोपालक के रूप में श्री मोतीराम जी पाटीदार, श्री राजाराम जी पाटीदार का सम्मान किया गया, जिनके पास 1 इंच जमीन नहीं है फिर भी गौमाता का पालन कर रहे हैं।
- अंबिका गुरुकुल पिपरी में माँ शारदा गो विज्ञान शाला के निर्माण के लिए कु. आस्था व डॉ सुनील पाटीदार ने अपने जन्मदिवस पर पार्टी ना करके उस राशि को बचाकर 5100 रुपये की राशि समर्पित की, उनका सम्मान किया गया।
- ग्राम में सुबह शाम फेरी निकालने वाले श्री गंगाराम जी पाटीदार उम्र 80 वर्ष ने एक एक रुपया इकठ्ठा कर समाज को करीब चार लाख की राशि घोटिया में मंदिर निर्माण के लिए दी उनका सम्मान किया गया ।
- ग्राम में संयुक्त परिवार के रूप में अभी भी इकठ्ठे रह रहे ऐसे श्री ओंकार जी पाटीदार एवं श्री भगवान मथुरालाल पाटीदार का सम्मान किया गया।
- श्री रमेश जी पाटीदार पूरे परिवार सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे इसलिए उनका भी सम्मान किया गया।
- ग्राम की दो छात्राएं जो पहली कक्षा से 12वीं कक्षा तक प्रथम स्थान प्राप्त करती आयी हैं कुमारी रितु पाटीदार व कुमारी पूजा पाटीदार का सम्मान किया।
- ग्राम सेवक के रूप में श्री जगदीश जी, श्री सीताराम जी को सम्मानित किया गया।

कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई में डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन

भिलाई। छत्तीसगढ़

13 नवम्बर 2021 को कल्याण स्नातकोत्तर महाविद्यालय भिलाई के वनस्पति विभाग में डिवाइन वर्कशॉप का आयोजन किया गया। जिसमें दिव्य भारत युवा संघ छत्तीसगढ़ के संयोजक डॉ. पी. एल. साव एवं सहसंयोजक डॉ.योगेंद्र कुमार को वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। डॉ पी. एल.साव ने युवाओं को अपने अंदर पात्रता विकसित करने एवं अपने अंदर छुपी शक्तियों को पहचानने के विषय में मार्गदर्शन दिया। उन्हें अपनी प्रतिभा विकसित करने व राष्ट्र के निर्माण में उसका नियोजन करने के लिये प्रेरित किया। डॉ. योगेंद्र कुमार ने जीवन लक्ष्य सुनिश्चित करने तथा

वर्कशॉप में बच्चों को मार्गदर्शन देते डॉ.पी.एल.साव

सफलता प्राप्ति के सूत्रों पर चर्चा की। कोरोना संक्रमण काल के बाद यह पहली ऑफलाइन वर्क शॉप थी। कार्यक्रम को सफल बनाने में वनस्पति विभाग, बॉटनिकल सोसाइटी के विभागाध्यक्ष डॉ. जी के चंद्रोल, प्रियंका साहू, मनमीत सिंह राजपूत, राकेशसाहू एवं महाविद्यालय के छात्र छात्राओं का विशेष योगदान रहा।

गायत्री परिवार मुंबई चेतना केंद्र में राज फाउंडेशन का आगमन

गायत्री परिवार दिया, मुंबई। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार मुंबई परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने एवं समाज निर्माण व राष्ट्र निर्माण द्वारा युग निर्माण के उनके संकल्पों को पूरा करने में सतत सक्रिय है। इसी के अंतर्गत विगत 23 नवंबर को राज बुलियन प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर एवं राज फाउंडेशन के फाउंडर ट्रस्टी श्री राजकुमार जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती वंदना जी व वरिष्ठ पत्रकार एवं राज्यसभा

मुम्बई चेतना केन्द्र में राज फाउन्डेशन के ट्रस्टी श्री राजकुमार जी का स्वागत करते श्री मनुभाई पटेल

मीडिया सलाहकार समिति के ज्वाइंट सेक्रेटरी मिस्टर सुशील सोनी जी ने मुंबई के प्रभारी श्री मनु भाई पटेल जी के साथ गायत्री चेतना केंद्र सानपाड़ा में सद्भावना भेंट की। दोनों संगठनों ने किस प्रकार मुंबई में राष्ट्र निर्माण के कार्यों में हम अपना योगदान करें एवं साथ में समाज सेवा करें इन विषयों पर विस्तृत चर्चा की। श्री मनु भाई ने सभी अतिथियों का तिलक एवं गायत्री मंत्र दुपट्टा ओढ़ा कर स्वागत किया एवं अपने भाव उद्गार व्यक्त किये।

गायत्री विद्यापीठ में अ.भा. अधिवक्ता परिषद एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संविधान दिवस मनाया गया

राजनांदगांव। छत्तीसगढ़

26 नवम्बर को शिक्षा और संस्कार के क्षेत्र में अग्रणी गायत्री विद्यापीठ में अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा संविधान दिवस का आयोजन किया गया था। हमारा संविधान भारत की आत्मा है, प्रत्येक भारतीय नागरिक को इसकी जानकारी होना आवश्यक है।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी सदस्यों के स्वागत के साथ स्वागत उदबोधन गायत्री शिक्षण समिति के अध्यक्ष श्री नंदकिशोर जी सुरजन द्वारा दिया गया। जिसमें उन्होंने संविधान का महत्व बताते हुए संविधान का पालन पूर्ण निष्ठा के साथ करने हेतु सभी को प्रेरित किया। सभा में उपस्थित सभी सदस्यों द्वारा संविधान की जानकारी बच्चों को दी गई। श्री राजकुमार शर्मा द्वारा उदबोधन के साथ बच्चों के लिए प्रश्नोत्तरी का भी कार्यक्रम करवाया गया, जिसमें बच्चों ने बढ़-चढकर हिस्सा लिया। कार्यक्रम की रोचकता आरंभ से लेकर अंत तक बनी रही। संविधान सम्बन्धी अनेकानेक प्रश्नों के जवाब बच्चों ने अपनी हाजिर जवाबी के साथ प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन श्री बी.एल.सोनी जी द्वारा किया गया। आभार प्रदर्शन उपप्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर द्वारा किया गया।

इस अवसर पर वरिष्ठ अधिवक्ता श्री प्रकाश सांखला, लायंस क्लब, एम.जे.एफ. के श्री राजकुमार शर्मा, श्री विष्णु साव, श्री प्रवीणमल जी सांखला, विधिक सहायता केन्द्र से रंजीता वैष्णव एवं अनुज्ञा मिश्रा, शाला की प्राचार्य श्रीमती वत्सला अय्यर, उपप्राचार्य श्रीमती रश्मि ठाकुर समस्त शिक्षक शिक्षिकाएँ एवं जिसमें कक्षा 9वीं से 11वीं के विद्यार्थी भी उपस्थित थे।

राजनांदगांवः संविधान दिवस पर अ.भा.अधिवक्ता परिषद एवं गायत्री शिक्षण समिति के अधिकारीगण

सत्कर्मों के द्वारा पुण्य फल स्वर्ग आदि प्राप्त होने का जो लाभ-प्राप्त होता है, उसका कारण यह है कि सत्कर्मों के द्वारा सद्भावनाएँ परिपुष्ट होती हैं। -अखण्ड ज्योति 1963 मई

श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य तीर्थ नींव पूजन समारोह

श्रीराम साधना आरण्यक नैमिषारण्य तीर्थ, नींव पूजन समारोह में परिजनों को सम्बोधित करते एवं भूमि पूजन करते आद.डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी, कथा-सत्संग करते श्री श्यामबिहारी दुबेजी

नैमिषारण्य तीर्थ, सीतापुर। उत्तर प्रदेश

भगवान मनु शतरूपा की तपस्थली जहाँ भगवान व्यास द्वारा पुराणों की 0रचना की गई। जहाँ सत्यनारायण व्रत कथा सूत शौनक ऋषि द्वारा जहां लिखी गई। पितरों के उद्धार सद्गति शांति पाने हेतु सतयुग का दुनिया में प्रथम तीर्थ नैमिषारण्य नाभि गया के रूप में जाना जाता है, परम पूज्य गुरुदेव युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जीने अपने गुरु हिमालय वासी ऋषि सत्ता स्वामी सर्वेश्वरानंदजी के आदेश पर यहाँ चक्रतीर्थ नैमिषारण्य में गायत्री महामंत्र के दो महापुरश्चरण संपन्न किए थे। माना जाता है कि नैमिषारण्य में सभी तीर्थों का वास है,यह तप-साधना और ज्ञान चर्चा से श्रेष्ठतम सांस्कृतिक धाराओं का विकास करने वाली उत्तर प्रदेश के सीतापुर में अट्ठासी हजार ऋषियों की तपस्थली है। यहीं पर गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान मे श्रीराम साधना आरण्यक का भूमि पूजन संकल्प समारोह संपन्न हुआ। 23 नवंबर से शुरू यह समारोह 24 नवंबर तक चला। इस अवधि में गायत्री परिवार के विविध कार्यक्रम संपन्न हुए। समारोह में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ.चिन्मय पंडयाजी बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उनके साथ में शान्तिकुञ्ज से टोली में कार्यक्रम विभाग प्रभारी श्री श्याम बिहारी दुबेजी, उत्तर प्रदेश जोन प्रभारी श्री नरेन्द्र ठाकुर जी, श्री हरीप्रसाद चौधरी, श्री मनीष साहू, श्री वेद प्रकाश की टोली पहुँची थी।

इसके पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आद.डॉ.चिन्मय पण्डयाजी का लखनऊ एरपोर्ट पर लखनऊ गायत्री परिवार के श्री निगमजी, श्री उमानंदजी, श्री सुधाकरसिंहजी, श्री सुधांशुजी, श्री चतुर्वेदी जी एवं लखनऊ उपजोन के श्री के. के.श्रीवास्तव आदि की टीम ने एवं सेंकडो भाई बहिनोंने भव्य स्वागत किया।

दिनांक 23 नवंबर को केंद्रीय टोली के रामचरित मानस मर्मज्ञ कथा वाचक पंडित श्याम बिहारी दुबे जी द्वारा संगीत-सत्संग एवं ज्ञान चर्चा हुई।

दिनांक 24 नवंबर को सुबह जागरण, प्रार्थना, आरती-गायत्री स्तवन, ध्यान व सामूहिक गायत्री महामंत्र साधना, गायत्री महायज्ञ एवं विविध संस्कार हुआ। तत्पश्चात केंद्रीय टोली द्वारा संगीत-सत्संग एवं ज्ञान चर्चा, सुबह नौ बजे धर्म ध्वजारोहण मुख्य अतिथि द्वारा किया गया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि, डॉ. चिन्मय पंडया द्वारा देव पूजन, साढ़े नौ बजे से भूमि पूजन कार्यक्रम तथा दस बजे से ग्यारह बजे तक बतौर मुख्य अतिथि का मार्गदर्शन उत्तर प्रदेश से आए विभिन्न जनपदों के हजारों परिजनों को प्राप्त हुआ।

समारोह में आरण्यक के प्रमुख श्री ललित दीक्षित एवं प्रबंध ट्रस्टी सुधाकर सिंह, सहित सीतापुर जनपद की युवा टीम, कानपुर उन्नाव, शाहजहांपुर, बंडा, सीतापुर बिसवां महमूदाबाद लहरपुर मिश्रिख सिधौली महोली, हरदोई, लखीमपुर खीरी, लखनऊ, बाराबंकी, कन्नौज फरुर्खाबाद, रायबरेली, उत्तर प्रदेश के युवा टीम समन्वयक श्री प्रभाकर सक्सेना एवं आदित्य पांडे, अतुल सिंह सहित प्रदेश के विभिन्न जनपदों के परिजनों की विशेष उपस्थिति रही। सवायजपुर से माननीय विधायक मानवेंद्र प्रताप सिंह जी, पुवायां विधायक श्री चेतराम जी, श्रीमती सरला जी मिश्रिख-नैमिषारण्य नगर पालिका अध्यक्षा महोदया जी, जिला पंचायत सदस्य श्री प्रदीप जायसवाल एवं उनकी युवा टीम के अलावा लखनऊ कमिश्नर श्री राजन कुमार आईएएस के साथ-साथ कई गणमान्य अधिकारी आयोजन में उपस्थित रहे। यह आरण्यक गायत्री परिवार के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है। श्री ललित दीक्षित एवं सुधाकरहि की टीम नें एवं उत्तर प्रदेश के नैमिषारण्य के आसपास के बीस जिलों के गायत्री परिवार के परिजनों के सहायोग से यह कार्यक्रम सफल सम्पन्न हुआ।

नैमिषारण्य तीर्थ में भूमि पूजन समारोह के मुख्य आकर्षण

- यह अट्ठासी हजार ऋषियों की तपस्थली है।
- श्रीराम साधना आरण्यक का भूमिपूजन संकल्प समारोह संपन्न हुआ।
- चक्रतीर्थ नैमिषारण्य में गायत्री परिवार के परिजनों ने गायत्री महामंत्र के दो महा पुरश्चरण संपन्न किए।
- देव संस्कृति विश्व विद्यालय के प्रति कुलपति डॉ.चिन्मय पण्ड्याजी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।
- रामचरित मानस मर्मज्ञ कथा वाचक पंडित श्री श्याम बिहारी दुबे जी द्वारा संगीत-सत्संग-ज्ञान चर्चा हुई।

दधिच कुण्ड तीर्थ में आद.डॉ.चिन्मय पण्डयाजी, चक्रतीर्थ के अध्यक्ष श्री राजरानायण तिवारी को देव स्थापना का चित्र भेट करते एवं आईएएस राजन कुमार लखनऊ कमिश्नर को युगसाहित्य भेट करते आद.चिन्मयजी

नाराकोडुरु गायत्री गायत्री शक्तिपीठ का भूमि पूजन समारोह

साधना केन्द्र एवं स्किल डेवलपमेन्ट ट्रेनिंग सेन्टर का भूमिपूजन समारोह

नाराकोडुरु, गुंटूर। आंध्र प्रदेश

शांतिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 14 नवम्बर 2021 को देव संस्कृति विश्व विद्यालय शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के प्रति कुलपति आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्डयाजी विजयवाड़ा आंध्र प्रदेश विमानपत्तन पर पहुँचे, जहाँ पर गायत्री परिवार के नाराकोडूरु गायत्री गायत्री शक्तिपीठ के परिजनों ने भव्य स्वागत किया। दिनाँक 15 नवम्बर 2021 के दिन आंध्र प्रदेश के गुंटूर जिले में स्थित नाराकोडूरु गायत्री चेतना केन्द्र का भूमि पूजन समारोह रखा गया था। विशिष्ट अतिथि महान क्रांतिकारी विश्व हिन्दू परिषद सेंट्रल जॉइंट सेक्रेटरी श्री राघवलूजीने भारतीय संस्कृति के उत्थान एवं भारत के नव निर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका की सराहना की। यहाँ ये उल्लेखनीय है कि गायत्री चेतना केन्द्र नाराकोडूरु के माध्यम से दक्षिण भारतीय भाषाओं में शिविर, साधना, स्वावलम्बन एवं कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण चलाए जाएँगे।

शांतिकुञ्ज की टोली सर्वश्री परमानंद द्विवेदी, श्री उत्तम गायकवाड, श्री रामदास रघुवंशी एवं श्री शिवाजी राव एवं श्री संदीप जी के द्वारा कर्मकाण्ड सम्पन्न कराया गया।

आंध्र प्रदेश के गुंटूर में एकादशी के शुभ मुहूर्त में नाराकोडुरु केन्द्र के भूमि पूजन के अवसर पर आदरणीय डॉ.चिन्मय पण्डयाजी ने यहाँ पर गौ पूजन, सप्त ऋषि पूजन, आंवले का वृक्ष रोपण कर पूजन किया । कार्यक्रम में उपस्थित गायत्री परिवार के परिजन एवं नाराकोडुरु के गणमान्य परिजनों को सम्बोधित किया।

इस कार्यक्रम में दक्षिण भारत के वरिष्ठ श्री अश्विनी सुब्बाराव जी, श्री एमवीएस राजू, श्री वासुगारू, श्री जोगसिंह राजपूरोहित जी, श्री मुकेश जी, श्री डीवीआर मूर्तिजी, श्री रमेश जी वर्मा एवं दक्षिण भारत की युवा टीम उपस्थित रही थी।

नाराकोडूरु गायत्री शक्तिपीठ का भूमि पूजन समारोह में परिजनों को सम्बोधित करते आद.डॉ.चिन्मय पण्डयाजी

विदेश समाचार

न्यूजीलेण्ड गायत्री परिवार के परिजनों की सक्रियता बढ़ी

गायत्री परिवार, न्यूजीलेण्ड

गायत्री परिवार न्यूजीलैंड के परिजनों ने व्हाट्सएप पर अखंड ज्योति पत्रिका के स्वाध्याय का क्रम प्रारंभ किया है जो प्रति मंगलवार और शुक्रवार को शाम 6:00 से 6:30 तक चलता है। परिजन व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से अखंड ज्योति का स्वाध्याय करते हैं जिसमें रोशनी त्रिवेदी वेस्टर्न न्यूजीलैंड, कृष्णा माला ऑकलैंड, संदीप पाटिल ऑकलैंड, दीप्ति ओझा क्राइस्टचर्च, मंजू महापात्रा भारत से और दीप्ति महापात्रा हैमिल्टन से शामिल हैं। इसी प्रकार प्रति गुरुवार सायं 8:00 से 8:30 बजे अखंड ज्योति अंग्रेजी का भी न्यूजीलैंड के परिजन व्हाट्सएप के माध्यम से स्वाध्याय कर रहे हैं। जिसमें हैमिल्टन से नीता रानी, एनजीलो, कीथार्ना, दीप्ति महापात्रा और हॉकीटिका से मधुरा बहन शामिल हैं।

गायत्री यज्ञ के साथ पुंसवन संस्कार कराते परिजन

ऑकलैंड में मोनिका बहन और हीरेन भाई पटेल के घर पर दीप्ति महापात्रा ने गायत्री यज्ञ के माध्यम से पुंसवन संस्कार संपन्न कराया। उपस्थित सभी परिजनों ने नियमित गायत्री जप करने एवं साप्ताहिक अखंड ज्योति स्वाध्याय में शामिल होने का संकल्प लिया।

क्राइस्टचर्च न्यू जीलैंड में ओझा परिवार की बालिकाओं वाणी एवं वृंदा का गायत्री महायज्ञ के माध्यम से जन्मदिन मनाया गया जिसमें परिवार के साथ उनके इष्ट मित्र भी शामिल हुए दीप्ति एवं अनिल ओझा जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया।

गायत्री यज्ञ के साथ जन्म दिवस मनाते परिजन

केवल मात्र सांसारिक सुखों की पूर्ति में अपनी शक्तियों का अपव्यय करना बुद्धिमानी की बात नहीं मानी जा सकती। –अखण्ड ज्योति 1965 जनवरी

शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयन्ती वर्ष के अवसर पर देसंविवि एवं शान्तिकुञ्ज में हुआ महामहिम राष्ट्रपति का शुभागमन

भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रयास सराहनीयः महामहिम राष्ट्रपति

1. महामहिम राष्ट्रपति से श्रद्धेय द्वय की मुलाकात, 2. गायत्री माता का चित्र भेट करते हुए, 3. देसंविवि अधिकारीगण के साथ, 4. प्रज्ञेश्वर महादेव का पूजन करते एवं 5.वृक्षारोपण करते महामहिम राष्ट्रपतिजी एवं श्रद्धेय डॉ.प्रणव पण्ड्याजी

अखिल विश्व गायत्री परिवार के मुख्यालय शान्तिकुञ्ज के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री राम नाथ कोविन्द, उत्तराखंड के राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) गुरमीत सिंह एवं उच्च शिक्षा मंत्री श्रीधन सिंह रावत देवसंस्कृति विश्वविद्यालय एवं शान्तिकुञ्ज पहुँचे। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय पहुँचने पर प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या, कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन ने माननीय राष्ट्रपति महोदय का पुष्पगुच्छ भेंटकर स्वागत अभिनन्दन किया।

विश्वविद्यालय परिसर स्थित मृत्युंजय सभागार में महामहिम राष्ट्रपति, राज्यपाल एवं उच्च शिक्षामंत्री के साथ कुलगीत एवं सामूहिक छायाचित्र का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्याजी ने माननीय राष्ट्रपतिजी को स्मृति चिन्ह स्वरूप गायत्री माता का चित्र, गंगाजलि, स्वावलंबन विभाग द्वारा निर्मित जूट बैग एवं पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रतिपादित सार्वभौम प्रज्ञा योग मार्गदर्शिका भेंट की। तत्पश्चात् महामहिम राष्ट्रपतिजी ने देसंविवि के पावन प्रांगण में स्मृति स्वरूप रुद्राक्ष के पौधे का भी रोपण किया। साथ ही परिवार सहित प्रज्ञेश्वर महादेव मन्दिर में पूजा-अर्चना की, भगवान शिव का आशीर्वाद लिया। यहां विद्यार्थियों द्वारा सामूहिक वैदिक मंत्रोच्चारण कर विश्व कल्याण की प्रार्थना की गई।

भारत एवं बाल्टिक देशों के संबंधों की मधुरता एवं मजबूती बढ़ाने के उद्देश्य से स्थापित एशिया के प्रथम बाल्टिक सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र का अवलोकन करते हुए महामहिम राष्ट्रपतिजी ने इसके माध्यम से किये जा रहे प्रयासों और अनुसंधानों की प्रशंसा की व राज्यपाल एवं उच्च शिक्षामंत्री से इन गतिविधियों को अन्तर्राष्ट्रीय फलक पर ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय भ्रमण के दौरान यहाँ की मूल्यपरक शिक्षण प्रणाली, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद, योग-आयुर्वेद, अनुसंधान, स्वावलंबन एवं विभिन्न रचनात्मक व शैक्षणिक गतिविधियों का महामहिम राष्ट्रपतिजी ने अवलोकन करते हुए विवि द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में उन्होंने युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं माता भगवती देवी शर्मा जी के पवित्र पावन कक्ष, युगऋषि द्वारा 1926 से प्रज्वलित अखण्ड दीपक का दर्शन किया, जहाँ आचार्यश्री ने विश्व मानवता के लिए तप-साधना एवं युगसाहित्य सृजन का महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किया हैं। यह अखण्ड दीपक गायत्री परिजनों के श्रद्धा का केन्द्र है। ततपश्चात् महामहिम राष्ट्रपतिजी ने शान्तिकुञ्ज चौके में निर्मित सात्विक भोजन प्रसाद ग्रहण किया। गायत्री परिवार की संरक्षिका वंदनीया माताजी इसी चौके में अपने हाथों से परिजनों को भोजन-प्रसाद कराती रहीं, जिसके बल पर छोटा सा परिवार आज 18 करोड़ परिजनों का गायत्री परिवार बन गया है।

महामहिम राष्ट्रपति जीने

- भारत एवं बाल्टिक सांस्कृतिक अध्ययन केन्द्र का अवलोकन करते हुए इसके माध्यम से किये जा रहे प्रयासों और अनुसंधानो की प्रशंसा की।
- देसंविवि के पावन प्रांगण में स्मृति स्वरूप रुद्राक्ष के पौधे का रोपण किया।
- प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में पूजा-अर्चना कर भगवान शिव का आशीर्वाद लिया।

गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने माननीय राष्ट्रपतिजी का शान्तिकुञ्ज स्वर्ण जयंती वर्ष में शान्तिकुञ्ज आगमन पर स्वागत अभिनंदन एवं भेंटवार्ता की। डॉ. प्रणव पण्ड्याजी ने शान्तिकुञ्ज द्वारा चलाये जा रहे युवा जागरण, नारीजागरण, पर्यावरण आंदोलन सहित सप्त आंदोलन एवं विभिन्न रचनात्मक व सृजनात्मक कार्यक्रमों की जानकारी दी। माननीय राष्ट्रपति महोदय ने शान्तिकुञ्ज द्वारा चलाए जा रहे भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु गायत्री परिवार के कार्यकर्ताओं एवं समाज में उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय द्वय ने माननीय राष्ट्रपतिजी को गायत्री महामंत्र चादर एवं युगऋषि पूज्य आचार्यश्री द्वारा रचित साहित्य भेंटकर सम्मानित किया।

शान्तिकुञ्ज में उत्साहपूर्वक मनाई गई श्री गुरु नानक देव जी एवं रानी लक्ष्मीबाई जयंती जनजागरण रैली के साथ विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

श्री गुरु नानक देव जी व रानी लक्ष्मीबाई जयंती पर रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते पूर्व व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्राजी एवं कार्यक्रम विभाग प्रभारी श्री श्याम बिहारी दुबेजी, रैली में भाग लेते शांतिकुंज कार्यकर्ता एवं शिविरार्थी

शान्तिकुञ्ज 19 नवम्बर सिख सम्प्रदाय के प्रथम गुरु श्री गुरु नानकदेव जी एवं रानी लक्ष्मी बाई की जयंती उत्साहपूर्वक मनाई गयी। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज में दीपमहायज्ञ सहित विभिन्न आयोजन संपन्न हुए। प्रातः 8:30 बजे शान्तिकुञ्ज में जन जागरण रैली निकाली। पूर्व व्यवस्थापक श्री शिवप्रसाद मिश्रा जी ने रैली को शान्तिकुञ्ज के देवात्मा हिमालय परिसर से हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में श्री गुरु नानकदेव जी के जीवन से जुड़े अनेक प्रसंग एवं रानी लक्ष्मी बाई की वीरता पर नारे दोहराये गये। पीतवस्त्रधारी भाई-बहिन अपने-अपने गले में ज्ञानपट लेकर चल रहे थे। जन जागरण रैली हरिपुर कलाँ, देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिसर से होते हुए शान्तिकुञ्ज के पावन समाधि स्थल पर पहुँची, जहाँ महिला मण्डल की बहिनों ने आरती कर स्वागत किया।

अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि श्री गुरु नानक देव जी समाज को जागरूक करने के उद्देश्य से सदैव परिव्रज्या करते रहें। उन्होंने धर्म संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता के लिए कार्य किया है। श्री गुरु नानकदेव जी एक दार्शनिक, समाज सुधारक, कवि, गृहस्थ, योगी और देशभक्त भी थे। गायत्री परिवार प्रमुख ने कहा कि झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई आदर्श वीरांगना थीं। वे कभी समस्याओं से नहीं घबराई, उन्हें अपने कर्तव्य पालन से कोई भी प्रलोभन विमुख नहीं कर सका। वह सदैव अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए आत्मविश्वास से भरी रहीं। व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा ने कहा कि श्री गुरु नानकदेव जी का जीवन और शिक्षाएँ केवल धर्म विशेष को ही नहीं; बल्कि पूरी मानव जाति को सही दिशा दिखाती हैं। रानी लक्ष्मी बाई के जीवन के अनेक प्रसंगों को याद किया गया।

गायत्री विद्यापीठ के छात्र का खेलो इंडिया में चयन

गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज की कक्षा ग्यारह के छात्र रोहित यादव ने भारत सरकार के **खेलो इंडिया** में चयनित होकर शान्तिकुञ्ज परिवार को गौरवान्वित किया है। रोहित का चयन राष्ट्रीय प्रतियोगिता भुवनेश्वर, ओडिशा में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर हुआ है। रबर ब्वाय के नाम से विख्यात रोहित को योग के तीन सौ से अधिक आसन करने में महारथ हासिल है। वे राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय योग प्रतियोगिता में दो दर्जन से अधिक पदक अपने नाम कर चुके हैं। भारत सरकार के खेलो इंडिया में चयन होने पर गायत्री विद्यापीठ के अभिभावकद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अपना शुभाशीष दिया है।

गायत्री विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या ने कहा कि रोहित का योग के लिए भारत सरकार के खेलो इंडिया में चयन होना गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज के साथ ही हरिद्वार के लिए भी गौरव की बात है। गायत्री विद्यापीठ में विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए पढ़ाई के साथ-साथ चलाये जा रहे अन्य प्रशिक्षणों का ही परिणाम है कि यहाँ के विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में परचम लहरा रहे हैं। रोहित चार वर्ष की उम्र से ही अपने पिता शान्तिकुञ्ज कार्यकर्त्ता श्री रविन्द्र यादव से प्रशिक्षण ले रहे हैं।

विगत दिनों ओडिशा में देश भर के युवाओं के लिए खेलो इंडिया में चयन हेतु विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई थीं। इसमें उत्तराखण्ड राज्य की ओर से योग के क्षेत्र में गायत्री विद्यापीठ के रोहित ने भाग लिया था। व्यवस्थापक श्री महेन्द्र शर्मा सहित शान्तिकुञ्ज एवं विद्यापीठ परिवार ने भी रोहित को बधाई दी।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। संपादक- प्रमोद शर्मा। पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार नीचे लिखे ई-मेल से भेजें-
email : news@awgp.org

Publication date: 12.12.2021
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23